Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 1-2

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बद्र

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

2-9 जमादी सानी 1442 हिज्री कमरी 6-13 सुलह 1401 हिज्री शम्सी 6-13 जनवरी 2022 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا دِيۡنَكُمۡ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ وَالۡكُفَّارَ اَوۡلِيَآءَ‌ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठा और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

बीमार सवार हो कर तवाफ़ करे

(1632) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ऊंटपर सवार थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हजर-ए-अस्वद के सामने आते तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी तरफ़ एक चीज़ से जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ में थी इशारा करते और अल्लाहु-अकबर कहते।

(1633) हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शिकायत की कि मैं बीमार हूँ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सवार हो कर लोगों के पीछे-पीछे तवाफ़ कर लो। इसलिए मैं ने तवाफ़ किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैतुल्लाह के पहलू में नमाज़ पढ़ रहे थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सूर: وَالطُّوۡرِ وَكِتٰبٍ مَّسۡطُوۡرٍ तिलावत फ़र्मा रहे थे।

हज़रत-ए-सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली अल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं हदीस नंबर 1632 में बीमारी इत्यादि का वर्णन नहीं लेकिन अब्बू दाऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से जो रिवायत नक़ल की है उस में यह शब्द हैं اَنَّ رَسُوۡلَ اللّٰہِ ﷺ قَدِمَ مَكَّةَ وَهُوَ يَشۡتَكِي فَطَافَ عَلٰی رَاحِلَتِهٖ अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का तशरीफ़ लाए, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमार थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी सवारी पर सवार हो कर तवाफ़ किया। एक व्यक्ति जो दूर दराज़ की यात्रा तै करके गया हो और यदि वह बीमार हो जाए तो शरीअत-ए-इस्लाम ने सहूलत दी है और उसे हज के सवाब से वंचित नहीं रखा। वह सवारी पर तवाफ़ कर सकता है।

(बुख़ारी, भाग 3 किताबुल हज्ज, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

आफ़रीन है इस सिद्दीक़ पर कि ख़ुदा तआला की सीमाओं को तोड़ना पसन्द न किया और इसके विपरीत हर प्रकार के कष्ट और दुख उठाने को तत्पर हो गए ।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की सुन्दरता तथा उपकार के चाहने वाले और सच्चे आशिक़ थे।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का सिद्दीक़ियत का स्थान

यदि पिछले ज़माना में इस का उदाहरण देखा जाए तो फिर यूसुफ़ की सिद्दीक़ियत है ऐसी सच्चाई दिखाई कि यूसुफ़ सिद्दीक़ कहलाया। एक ख़ूबसूरत, सम्मान्नीय और जवान औरत जो बड़े बड़े दावे करती है, ठीक एकान्त और अकेले में बुरा कार्य करना चाहती है परन्तु आफ़रीन है इस सिद्दीक़ पर कि ख़ुदा तआला की सीमाओं को तोड़ना पसन्द न किया और इसके विपरीत हर प्रकार के कष्ट और दुख उठाने को तत्पर हो गया। यहां तक कि क़ैदी की ज़िन्दगी व्यतीत करना स्वीकार कर ली और कहा رَبِّ السِّجۡنُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا یَدۡعُوۡنَنِیۡۤ اِلَیۡهِ (यूसुफ़:34) अर्थात यूसुफ़ ने दुआ की कि हे रब्ब मुझ को क़ैद पसन्द है इस बात से जिसकी तरफ़ वह मुझे बुलाती है। इससे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पवित्र प्रकृति और नबुव्वत की ग़ैरत का कैसा पता लगता है कि दूसरी बातों का वर्णन तक नहीं किया क्या मतलब कि इस का नाम नहीं लिया। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की सुन्दरता तथा उपकार के चाहने वाले और सच्चे आशिक़ थे। उनकी नज़र में अपने महबूब के अतिरिक्त दूसरी कोई बात जच सकती न थी। वह हरगिज़ पसन्द न करते थे कि अल्लाह की सीमाओं को तोड़ें।

कहते हैं कि एक लम्बा समय जो बारह वर्ष के लगभग बताया जाता है वह जेल में रहे। परन्तु इस समय में कभी शिकायत की बात ज़बान पर न लाए। अल्लाह तआला और इस की तक़दीर पर पूरे राज़ी रहे। इस समय में बादशाह को कोई चिट्ठी भी नहीं दी कि इन के मामला को सोचा जाए या उन्हें रिहाई दी जाए। बल्कि कहा जाता है कि इस उद्देश्य वाली औरत ने कष्टों का क्रम बढ़ा दिया। कि किसी तरह पर वह फिसल जाएं, परन्तु इस सिद्दीक़ ने अपनी सिदक़ न छोड़ी। ख़ुदा ने उनको सिद्दीक़ ठहराया। यह भी सिद्दीक़ का एक स्थान है कि दुनिया की कोई आफ़त , कोई कष्ट और कोई अपमान उसे अल्लाह की सीमाओं के

शेष पृष्ठ 15 पर

सब ही इन्सानों के अंदर अल्लाह ताआला की मुहब्बत की भावना है लेकिन एक आदमी जो रुहानी आहार खाता है उसके विवेक को प्रताप और रोशनी मिल जाती है दूसरे को नहीं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सूरः अल् नहल आयत : 12 یُنۡۢبِتُ لَکُمۡ بِہِ الزَّرۡعَ وَالزَّیۡتُوۡنَ وَالنَّخِیۡلَ وَالۡاَعۡنَابَ وَمِنۡ کُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیَۃً لِّقَوۡمٍ یَّتَفَکَّرُوۡنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

शायद किसी को आपत्ति हो कि इन्सान का प्रथम आहार जीवित प्राणियों का आहार नहीं क्योंकि एक विशेष वर्ग दुनिया का केवल सब्ज़ियों का आहार प्रयोग करता है। परन्तु यह आरोप समझ और ज्ञान की कमी का परिणाम होगा क्योंकि जो जीवित प्राणियों को आहार के रूप में प्रयोग नहीं करने का दावा करते हैं वे निसंदेह गोश्त तो नहीं खाते परन्तु उनका महत्त्वपूर्ण आहार भी जीवित प्राणियों का है। माँ का दूध पीए बग़ैर कितने बच्चे पलते हैं, फिर क्या माँ का दूध जीवित प्राणियों का आहार नहीं?और जो माँ का दूध नहीं पीते वे पशुओं का दूध पीते हैं और वे भी जीवित प्राणियों का आहार है और जो लोग जीवित प्राणियों के आहार के प्रयोग से वास्तव में इंकार करते हैं वे बड़ी आयु में भी घी दूध इस्तिमाल करते हैं जो जीवित प्राणियों का आहार हैं। अत: ऐसा आदमी कोई भी नहीं जिसका महत्वपूर्ण आहार जीवित प्राणियों का न हो और जो लोग यह दावा करते हैं कि वे जीवित प्राणियों का आहार प्रयोग नहीं करते वे या तो ख़ुद धोखे में ग्रस्त होते हैं या जान-बूझ कर दूसरों को धोखा देते हैं। वे यह तो कह सकते हैं कि हम गोश्त नहीं खाते परन्तु यह नहीं कह सकते कि वे किसी जीवित प्राणी का आहार भी इस्तिमाल नहीं करते।

اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیَۃً لِّقَوۡمٍ یَّتَفَکَّرُوۡنَ आहार के वर्णन के अंत में फ़रमाया कि इस में फ़िक्र करने वालों और सोचने वालों के लिए निशान है। इससे एक तो इस तरफ़ संकेत किया कि इन्सानी दिमाग़ आहार से

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की आयरलैण्ड की यात्रा, सितम्बर 2014 ई (भाग-1)

करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से इंटरव्यू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

21 सितम्बर 2014 दिन रविवार

आज का दिन जमाअत अहमदिया की तारीख़ में और विशेषता जमाअत आयरलैंड की तारीख़ में एक अत्यधिक एहमीयत का हामिल और मुबारक है।

आज हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने ईसाइयत के गढ़ मुल्क आयरलैंड में जहां उस समय ईसाइयत की एक हज़ार पाँच सौ पचपन Churches उपस्थित हैं। ख़ुदा-ए वाहिद-ओ-यगाना की इबादत के लिए बनाई की जाने वाली जमाअत अहमदिया की पहली मस्जिद 'मस्जिद मर्यम' के उद्घाटन और इस देश के लोगों को ख़ुदा-ए वाहिद की ओर बुलाने और इस्लाम की हक़ीक़ी और सच्ची और शांतिप्रिय शिक्षा देने के लिए आयरलैंड का यह दूसरी यात्रा इख़तियार फ़रमाई

इस से पूर्व हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने 14 सितम्बर ता 20 सितम्बर 2010 तक आयरलैंड की पहली यात्रा इख़तियार फ़रमाई थी और इस इस 17 सितम्बर शुक्रवार के दिन इस मस्जिद का नींव का पत्थर रखा था।

आज इस यात्रा पर प्रस्थान के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ पौने तीन बजे अपनी रहने के स्थान से बाहर पधारे। हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए जमाअत के लोग पुरुष और महिलाएं मस्जिद बैयतुल फ़ज़ल के बाहरी सेहन में एकत्र थीं। इस अवसर पर आदरणीय मीर महमूद अहमद साहब ने हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और इजतिमाई दुआ करवाई।

इस के बाद बर्तानिया की बंदरगाह Holyhead के लिए प्रस्थान हुआ। लंदन से इस बंदरगाह Seaport की दूरी तीन सौ मील है। समुंद्र के किनारे आबाद Holyhead शहर सूबा वेल्ज़ में Anglesey का ओनटी का सबसे बड़ा शहर है। इस शहर और बंदरगाह की ख़ुसूसीयत यह है कि लगभग चार हज़ार वर्ष पूर्व से बर्तानिया की इस बंदरगाह से आयरलैंड की बंदरगाह डबलिन Dublin तक का यह समुंद्री रास्ता व्यपार के लिए प्रयोग हो रहा है और यहां से समुंद्री जहाज़ों की यात्रा चार हज़ार वर्ष पूर्व से जारी है। इस कारण से Holyhead की इस बंदरगाह को आइरिश Seaport भी कहा जाता है। लगभग पाँच घंटे 20 मिनट के यात्रा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की Holyhead शहर में तशरीफ़ आवरी हुई। जहां आदरणीय डाक्टर नसीर अहमद साहब रीजनल अमीर नॉर्थ वेस्ट रीजन और आदरणीय कलीम अहमद बाजवा साहब सदर जमाअत नॉर्थ वेल्ज़ ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। आज रात क़ियाम का प्रबन्ध इसी शहर के एक हिस्सा में स्थित Blackthorn Farm के एक रिहायशी अपार्टमंट में किया गया था। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। नमाज़ मग़रिब और ईशा की अदायगी का प्रबन्ध इसी अपार्टमंट के एक हिस्सा में किया गया था। आठ बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ मगरिब, ईशा जमा करके पढ़ाई

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक उन ख़ुद्दाम से बातचीत फ़रमाई जो मानचैसटर और Liverpool से यहां डयूटी के लिए पहुंचे थे। हुज़ूर अनवर के दरयाफ़त फ़रमाने पर ख़ुद्दाम ने बताया कि वह लगभग एक सौ दस मील की यात्रा करके आए हैं।

समुंद्र के किनारे Blackthorn Farm का यह क्षेत्र एक कैंपिंग एरिया भी है। इन ख़ुद्दाम ने भी एक बड़ा ख़ेमा लगया हुआ था। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक यह ख़ेमा भी देखा और मुंतज़मीन से इस क्षेत्र के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया।

इस के बाद रीजनल अमीर साहब नॉर्थवेस्ट और सदर जमाअत नॉर्थ वेल्ज़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में कहा कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से नॉर्थ वेल्ज़ जमाअत ने मस्जिद के बनने के लिए एक इमारत ख़रीदी है। जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मानचैसटर में मस्जिद दारुल अमान के उद्घाटन के बाद वापस तशरीफ़ ले जा रहे थे तो हुज़ूर अनवर ने क़ाज़ी नासिर अहमद भट्टी साहब स्थानीय नॉर्थ वेल्ज़ को संबोधित करते हुए फ़रमाया था कि अब आप भी वापस जाकर मस्जिद का प्रबन्ध करें। हुज़ूर अनवर ने इस इच्छा का इज़हार फ़रमाया था कि आयरलैंड जाते हुए आपकी ओर से होता जाऊंगा। इस लिए स्थानीय जमाअत ने हुज़ूर अनवर के इरशाद पर लब्बैक कहा और हम ने फरवरी 2014 ई. में मस्जिद के लिए जगह ख़रीद ली। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इंशा-ए-अल्लाह आयरलैंड से वापस आते हुए देख लेंगे।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

22 सितम्बर 2014 दिन सोमवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़-ए-फ़ज्र की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। ग्यारह बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान से बाहर पधारे और लगभग चालीस मिनट तक अपने ख़ुद्दाम के मध्य उपस्थित रहे। हुज़ूर अनवर ने इस समुंद्र के किनारे पर आबाद इस सुन्दर क्षेत्र की तसावीर भी बनाई और अपने ख़ुद्दाम से विभिन्न मामलों पर बातचीत फ़रमाई। विशेषता मोबाइल फ़ोन में जो नई टैक्नोलोजी आ रही है इस हवाले से हुज़ूर अनवर ने विभिन्न ज़ावियों से फ़रमाया।

आदरणीय डाक्टर अब्दुल-मोमिन जदरान साहिब की नई ख़रीदी हुई गाड़ी भी क़ाफ़िला में शामिल थी ,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ स्नेह के साथ गाड़ी के पास तशरीफ़ लाए और इस में लगे हुए नए सिस्टम और सुविधाओं के बारे में डाक्टर जदरान साहिब से पूछा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने स्नेह के साथ अपने कैमरा से क़ाफ़िला के सदस्यों और इस अवसर पर उपस्थित लोगों और ख़ुद्दाम की तस्वीरें बनाईं और डयूटी के लिए आने वाले ख़ुद्दाम का हौसला बढ़ाया। इस के बाद बारह बजे के क़रीब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

अब प्रोग्राम के अनुसार यहां से बंदरगाह (पोर्ट के लिए रवानगी थी। यहां से बंदरगाह दस मिनट की दूरी पर थी। बारह बजकर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ तशरीफ़ लाए और डयूटी पर मौजूद सभी ख़ुद्दाम को हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा और ख़ुद्दाम ने अपने आक़ा के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य भी पाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और क़ाफ़िला पोर्ट के लिए रवाना हुआ

बारह बजकर 50 मिनट पर Holyhead पोर्ट पर पधारे । जहां VIP प्रोटोकोल प्रबन्ध के अधीन पोर्ट प्रबन्धतों की एक गाड़ी क़ाफ़िला की गाड़ियों को Escort करती हुई Ferry के अंदर ले गई। इस तरह क़ाफ़िला की गाड़ियां सबसे पहले Irish Ferries पर बोर्ड हुईं। जहाज़ के विशेष प्रोटोकोल स्टाफ़ ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हुज़ूर अनवर एक विशेष भाग में तशरीफ़ ले गए।

ग्यारह मंज़िलों पर अधारित यह समुद्री जहाज़ अपने वक़्त पर दो बजकर दस मिनट पर बर्तानिया की पोर्ट Holyhead से आयरलैंड की पोर्ट Dublin के लिए रवाना हुआ। जहाज़ में ही एक कमरा हासिल करके नमाज़ों की अदायगी का प्रबन्ध किया गया था। हुज़ूर अनवर ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाईं।

(शेष.....)

ख़ुत्बः जुमअः

अहमदी अपने माल ख़ुदा तआला के मार्ग में ख़र्च करते हैं तो इस सोच के साथ कि उन्होंने

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूर्ण करने में सहायता करनी है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा दुनिया में लहराना है

तहरीक-ए-जदीद के सत्तासीवें (87) वर्ष के सफ़ल और बाबरकत समापन और अठ्ठासीवें (88) वर्ष के आरम्भ का ऐलान

अल्लाह के फ़ज़्ल से तहरीक-ए-जदीद के माली निज़ाम में जमाअत को 3.15 मिलियन पाऊंड की माली क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ मिली जो पिछले वर्ष से आठ लाख बयालिस हज़ार पाऊंड अधिक है

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अपने सीमित वसायल के साथ जिस काम को भी शुरू करती है अल्लाह तआला उस में ऐसी बरकत डालता है कि देखने वाले समझते हैं कि शायद यह इस कार्य में कई मिलियन पाऊंडज़ का ख़र्च कर रहे हैं लेकिन उन्हें पता नहीं कि ये ग़रीब लोगों के पैसे हैं जिनको अल्लाह तआला की ओर से बरकत पड़ती है और इस के परिणाम में हमारे छोटे काम भी बड़े हो कर नज़र आते हैं

अल्लाह तआला जब दुनियावी लाभोंसे भी नवाज़ता है तो इस से भी एक अहमदी की इस ओर तवज्जा होती है कि ये मेरे किसी कमाल की वजह से नहीं बल्कि क़ुर्बानी का परिणाम है और यह एक अहमदी की सोच है किसी और की यह सोच नहीं आ सकती

नए अहमदी हों या पुराने, कोई भी जब सुनता है कि जमाअत अहमदिया किस तरह पैसे ख़र्च करती है और कहाँ कहाँ ख़र्च करती है तो इस का एक विशेष प्रभाव होता है

जिन जमाअतों में इस तरफ़ तवज्जा कम है यदि वह इस तरफ़ तवज्जा दें और उद्देश्य बताएं और महत्तव बताएं तो उनके चंदे बढ़ सकते हैं

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 नवम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में मोमिनीन की जो विशेषताएं वर्णन फ़रमाई हैं उनमें से एक यह है कि वह अपने पाक माल से अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए अल्लाह तआला के मार्ग में ख़र्च करते हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में माल के ख़र्च के हवाले से जब कहीं बातें की हैं तो केवल यही बताया कि माल ख़र्च करने वाले मोमिन हैं। कहीं सदक़ात की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए सदक़ात के हवाले से बात की है। कहीं ज़कात के हवाले से अल्लाह तआला ने ख़र्च का फ़रमाया है। फिर जो क़ुर्बानी करने वाले अपना माल ख़ुदा तआला के मार्ग में देते हैं उस माल का खर्च भी बताया कि किस तरह ख़र्च करना है, कहाँ ख़र्च करना है जैसा कि इलाही जमाअतों का तरीक़ है कि वह अपने माल को पाक करने के लिए, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल हासिल करने के लिए, अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने के लिए ख़ुदा तआला के मार्ग में ख़र्च करती हैं।

जमाअत में भी इसी तरह माली क़ुर्बानियों का सिलसिला क़ायम है। जमाअत के लोगों को भी पता है कि अल्लाह तआला का यह हुक्म है और जो क़ुर्बानियां वह देते हैं वह किस तरह फिर ख़र्च की जाती हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस मिशन को लेकर आए थे अर्थात् अल्लाह तआला की तौहीद को दुनिया में क़ायम करना और इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा दुनिया में लहराना। यह काम कोई मामूली काम नहीं है बड़ा वसीअ काम है दुनिया में इस संदेश को फैलाना। और बहरहाल इसके लिए अख़राजात की ज़रूरत होती है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के लोग अल्लाह तआला के इस हुक्म को समझते हुए कि अपना माल ख़ुदा तआला के मार्ग में ख़र्च करो, ये अख़राजात पूरे करने की कोशिश करते हैं। दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों में फैले हुए अहमदी अपनी माली क़ुर्बानियों के ऐसे ऐसे उदाहरण पेश करते हैं कि जिन्हें देखकर इन्सान इस विश्वास पर पहले से बढ़कर क़ायम हो जाता है कि निसंदेह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के वही भेजे हुए हैं जिनके माध्यम से आख़िरी ज़माने में इस्लाम की सुन्दर शिक्षा दुनिया में फैलनी थी। यदि इस एक निशान को मुख़ालिफ़ीन ग़ौर से देखें और अपने दिलों के द्वेष को निकाल कर इन्साफ़ से काम लें तो अहमदियत की सच्चाई की यही निशानी उनके दिल व्यर्थ के विरोध से पाक कर सकती है लेकिन उनके दिल तो पत्थरों से भी अधिक सख़्त हैं विशेषता उल्मा के, तथाकथित उल्मा के। बहरहाल उनका मुआमला ख़ुदा तआला के साथ है।

जैसा कि मैंने कहा कि अहमदी अपने माल ख़ुदा तआला के मार्ग में ख़र्च करते हैं तो इस सोच के साथ कि उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को पूर्ण करने में सहायता करनी है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा दुनिया में लहराना है। निसंदेह यह अल्लाह तआला का मोमिनीन से वादा है कि तुम जो भी ख़र्च करते हो, जो माल भी अल्लाह तआला के मार्ग में देते हो उसे में कई गुना बढ़ा कर लोटाऊंगा लेकिन बहुत से अहमदी ऐसे हैं जो ये सोच रखते हैं कि हमें ख़ुदा तआला की प्रसन्नता उद्देश्य है। यदि दुनियावी फ़ायदा पहुंचता है तो यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है। उनकी यह सोच है कि क़ुर्बानी से अल्लाह तआला हमारे से प्रसन्न हो और हमारा अंतिम ठिकाना सँवरने के सामान पैदा हो जाएं।

जमाअत अहमदिया कोई अरब पत्तियों की जमाअत नहीं है। ऐसी जमाअत है जिसके अधिकतर लोग ग़रीब या औसत दर्जा के लोगों हैं लेकिन इसके बावजूद क़ुर्बानी की एक भावना है। इस कोशिश में रहते हैं कि इस्लाम की निशात-ए-सानिया में हमारा भी हिस्सा हो जाए और फिर उनकी मामूली क़ुर्बानियां भी अल्लाह तआला के हाँ स्वीकार हो कर लाखों करोड़ों पाऊंड के बराबर फल लाती हैं। अत: असल चीज़ अल्लाह तआला के हाँ मक़बूलियत है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अपने सीमित माध्यमों के साथ जिस काम को भी शुरू करती है अल्लाह तआला उस में ऐसी बरकत डालता है कि देखने वाले समझते हैं कि शायद यह इस काम में कई मिलियन पाऊंडज़ का ख़र्च कर रहे हैं लेकिन उन्हें पता नहीं कि ये ग़रीब लोगों के पैसे हैं जिनमें अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकत पड़ती है और इस के नतीजा में हमारे छोटे काम भी बड़े हो कर नज़र आते हैं।

यहां यह भी बता दूं कि जब जमाअत बढ़ती है तो मुख़्तलिफ़ किस्म की सोच रखने वाले और कम तर्बीयत वाले या पुराने अहमदियों में से भी तर्बीयत की कमी की वजह से ऐसी सोच रखने वाले नज़र आ जाते हैं, घरों में भी बातें करते हैं, बच्चों के सामने भी बातें करते हैं, बच्चों के ज़हनों में भी प्रश्न उठने शुरू हो जाते हैं जो ये प्रश्न करते हैं कि हम क्यों और किस लिए चंदा दें? तो पहले तो ये ओहदेदारों का काम है कि अपने व्यवहारों और अमल से लोगों के संदेह दूर करें। लोगों में विश्वास क़ायम हो। पता हो कि जो चंदा लोग दे रहे हैं इस का एक ख़ास खर्च है और वह इसी उद्देश्य के लिए ख़र्च होता है। दूसरे प्यार से उन्हें समझाएँ कि माली क़ुर्बानी की क्या महत्तव है। ख़ुदा तआला की नज़र में यह चीज़ कितनी अहम है और यह माली क़ुर्बानी जो कर रहे होते हैं तो इसके बदले में अल्लाह तआला की प्रसन्नता उनको मिलती है। और फिर यह भी कि यह क़ुर्बानी कहाँ ख़र्च होती है। इशाअत-ए-इस्लाम पर ख़र्च होती है। टी.वी चैनल हमारा चल रहा है इस पर बेशुमार ख़र्च होता है। पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत हो रही है। ग़रीब बच्चों की शिक्षा पर ख़र्च हो रहा है। भूखों को खाना खिलाने पर ख़र्च हो रहा है। मुबल्लग़ीन की शिक्षा और उनके माध्यम से तब्लीग़ पर ख़र्च हो रहा है। मसाजिद बन रही हैं। इसी सम्बन्ध में और बहुत से जमाअत के ख़र्च हैं। तो यह बात मैंने इसलिए नहीं कही कि ख़ुदा-न-ख़्वास्ता लोगों में बहुत अधिक प्रश्न उठने लग गए हैं। इसलिए बताई है कि जब जमाअत फैलती है तो फैलाओ की वजह से शर फैलाने

वाले और शैतानी विचार पैदा करने वाले भी आ जाते हैं जो उपद्रव फेलाने की कोशिश करते हैं और कम तर्बीयत वालों के ज़हनों में संदेह पैदा करने की कोशिश करते हैं। अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि जमाअत के लोग ऐसी पुख़्ता सोच रखते हैं कि उन्हें पता है कि निज़ाम-ए-जमाअत चलाने के लिए अख़राजात की ज़रूरत है और यह अल्लाह तआला का हुक्म है कि उसके मार्ग में ख़र्च करो। अत: जमाअत में ऐसी बेशुमार उदाहरण हैं कि लोग अपने पास कुछ न होने के बावजूद अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए किसी न किसी माध्यम से इंतिज़ाम करके ख़र्च कर देते हैं और फिर अल्लाह तआला भी ऐसी क़ुर्बानियों को ज़ाए नहीं करता। अल्लाह तआला उन्हें अपने वादा के अनुसार कि وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِب और उसको वहां से रिज़्क़ देगा और देता है जहां से रिज़्क़ आने का उसे ख़्याल भी नहीं होगा। अल्लाह तआला भी इस तरह अपना वादा पूरा करता है और अहमदी ये नहीं कि केवल क़ुरआन-ए-करीम में पढ़ते हैं बल्कि आज भी इस को पूरा होते देखते हैं। इस बारे में अपने अनुभव लिखते हैं। मैं इस की उदाहरणों भी पेश करूँगा। ये कोई पुरानी बातें नहीं हैं कि पुराने लोगों की कहानियां हम सुन रहे हूँ बल्कि ऐसे अनुभवों से अल्लाह तआला आज भी मोमिनों के ईमान मज़बूत करता है और न केवल जिन पर अल्लाह तआला के फ़ज़ल होते हैं, जो बराह-ए-रास्त फ़ज़ल हासिल कर रहे हैं उनको फ़ायदा होता है और उनका ईमान मज़बूत होता है बल्कि जो उनके क़रीब रहने वाले हैं उनके भी ईमान मज़बूत होते हैं। उन्हें भी इस माली क़ुर्बानी का इस वजह से एहसास होता है और वे भी फिर अपनी क़ुर्बानियों में बढ़ने की कोशिश करते हैं ताकि अल्लाह तआला की प्रसन्नता हासिल करने वाले बनें। जैसा कि मैंने कहा कि मैं उदाहरणों को पेश करूँगा तो जो लोग मुझे अपनी क़ुर्बानियों के बारे में ख़त लिखते हैं, उनकी चंद उदाहरणों को पेश करता हूँ कि किस तरह अल्लाह तआला नवाज़ता है।

गिनी कनाकरी की एक मिसाल है। मुबल्लिग़ इंचार्ज ने लिखा कि जब मेरे ख़ुत्बे में से जो मैं ने तहरीक-ए-जदीद के चंदे के बारे में दिया था कुछ ईमान अफ़रोज़ वाक़ियात पढ़ कर जमाअत को सुनाए और उनको कहा कि यह आचरण तुम्हें भी दिखाने चाहिऐं तो एक महिला मैमूना साहिबा का फ़ोन आया और उन्होंने कहा कि घर में अख़राजात के लिए रक़म नहीं थी और उनके पति अपने काम के सिलसिला में शहर से बाहर गए हुए थे। जुमा की नमाज़ के बाद उनके पिता ने उन्हें एक लाख गिनी फ्रॉंक की रक़म भेंट दी जिस पर वह बताती हैं कि मैं इस दुविधा में थी कि चंदा दूं या घर के अख़राजात के लिए इस रक़म का प्रयोग करूँ। फिर मैंने दुआ करके आधी रक़म अर्थात् पच्चास हज़ार फ्रॉंक चंदा तहरीक-ए-जदीद में अदा कर दी। वह कहती हैं कि इस बात को चौबीस घंटे नहीं गुज़रे थे कि अल्लाह तआला ने मुझे तीन लाख फ्रॉंक की रक़म चमत्कारिक रूप में प्रदान की जहां से मुझे कोई गुमान भी नहीं था कि रक़म मिलेगी। इस पर मैंने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया कि उसने मुझे सही फ़ैसला करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई और कहती हैं कि मेरे ईमान में भी बहुत बढ़ोतरी हुई।

कैनेडा की एक मज्लिस की सदर कहती हैं कि सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद ने बजट को पूरा करने की तहरीक की तो चंदा नहीं देने वालीं मेम्बरात के बक़ायाजात के टोटल जब पूछे किए गए तो वहां के लिहाज़ से वह 325 डालर की एक मामूली रक़म थी। कहती हैं मैंने सोचा कि मैं अपने पास से ही अदा कर देती हूँ लेकिन जब मैंने बैंक एकाऊंट देखा तो वहां तो कोई रक़म नहीं थी बल्कि माइनस में एकाऊंट था। तीन डालर अधिक ख़र्च हुए हुए थे लेकिन कहती हैं अगले दिन जब मैंने एकाऊंट चैक किया तो मेरे आश्चर्य की इंतिहा नहीं रही कि मेरे एकाऊंट में तीन हज़ार डालर से भी कुछ ज़ायद रक़म थी। कहती हैं कि यह वह रक़म थी जो बहुत अरसा से pending थी और इस के मिलने की भी कोई सूरत नहीं थी लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जब यह नीयत देखी कि मैं बक़ाया अदा करती हूँ तो अल्लाह तआला ने इस की अदायगी के सामान पैदा कर दिए और फ़ौरी तौर पर वह रक़म जो काफ़ी समय से pending थी वह मिल गई।

फिर साउथ अफ़्रीक़ा से एक दोस्त शाहीन साहिब कहते हैं कि मैंने तहरीक-ए-जदीद के चंदों की अदायगी की और अपने बैंक एकाऊंट में मौजूद आधी रक़म इस मद में दे दी। कहते हैं यह कोई बड़ी रक़म नहीं थी परन्तु उनके समक्ष यह था कि तहरीक-ए-जदीद की अदायगी का यह आख़िरी महीना है। यदि अब चंदा नहीं दिया तो फिर अवसर मिले या न मिले। इसलिए कहते हैं कि मैंने यह अदायगी कर दी और कहते हैं उसी दिन उनके पिता साहिब भी उन्हें मिलने आए और उन्होंने कहा कि उन्होंने कुछ रक़म ट्रांसफ़र की है जो उन्हें मिल जाएगी और ज़रूरियात पूरी हो जाएंगी। शाहीन साहिब कहती हैं जो रक़म उनके पिता साहिब से मिली वह चंदा तहरीक-ए-जदीद में दी गई रक़म से बीस गुना अधिक थी। इसलिए उन्होंने पिता साहिब से मिलने वाली इस रक़म पर फिर चंदा अदा कर दिया और फिर कहते हैं कि जब मैंने कहा कि मेरी आमद बढ़ गई और मुझे कहीं से रक़म अल्लाह तआला ने दे दी जहां से मुझे आशा नहीं थी फिर जब चंदा अदा किया तो उसी दिन शाम को उनके काम की जगह से मालकिन का फ़ोन आया कि तुम यदि ख़ाहिश रखते हो तो हम तुम्हें दुबई में एक नौकरी देना चाहते हैं। बहरहाल उन्होंने हाँ कर दी और इस तरह उनको बैरून-ए-मुल्क में एक बहुत अच्छे रोज़गार की भी वयवस्था हो गया। कहते हैं ये दो वाक़ियात संयोगवश नहीं हैं बल्कि मुझे विश्वास है कि अल्लाह तआला का यह फ़ज़ल केवल चंदा देने से और क़ुर्बानी करने से हुआ है।

फिर आस्ट्रेलिया के मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि जमाअत के एक मैंबर बताते हैं कि उन्होंने चंदा देने का वादा किया। उनके माली हालात ठीक नहीं थे। वादे के अनुसार जब चंदा अदा किया तो दिल में विश्वास था कि अल्लाह तआला का वादा है तो ख़ुदा तआला मुझे सौ गुना बढ़ा कर देगा। इस तरह भी कुछ सोच रखते हैं। उन्होंने एक प्लाट ख़रीदा हुआ था जिसकी वैल्यू बढ़ने की कोई ख़ास उम्मीद नहीं थी लेकिन चंदे की अदायगी के बाद कहते हैं कि मोजज़ाना तौर पर इस प्लाट का लाभ सौ गुना से भी अधिक बढ़ गया और कहते हैं इस बात पर मेरा पुख़्ता विश्वास हो गया कि अल्लाह तआला ने इस माली क़ुर्बानी को क़बूल करते हुए यह फ़ज़ल फ़रमाया।

फिर मुबल्लिग़ कज़ाख़िस्तान लिखते हैं कि वहां एक लोकल मुख़लिस अहमदी अली बेग़ साहिब हैं। उन्होंने दस हज़ार तीनगे (tenge) जो उन की करंसी है तहरीक-ए-जदीद इत्यादि में अदा किए और कहते हैं उसके बाद में काम पर चला गया। कुछ ही दिनों के बाद कंपनी के आला अफ़्सर ने मुझे बुलाया और कहा कि हमारी कंपनी को इस दफ़ा बहुत मुनाफ़ा हुआ है। इसलिए हमने फ़ैसला किया है कि पूरी कंपनी में से तीन लोगों को अच्छा काम करने पर एक लाख का बोनस देंगे और कहते हैं कि अल्लाह तआला ने इस चंदे की वजह से दस गुना करके मुझे प्रदान कर दिया और इसकी मुझे कोई उम्मीद नहीं थी।

फिर बर्मिंघम यू.के से भी एक साहिब हैं। वह कहते हैं मैंने अपनी फ़ैमिली के साथ 2016 ई. में बैअत की थी और बैअत से पहले माली हालात काफ़ी ख़राब थे और क़र्ज़ भी बहुत अधिक था। जमाअत में आ कर जब अपनी हैसियत के अनुसार चंदों की अदायगी शुरू की बल्कि कई दफ़ा हैसियत से बढ़कर कुछ तहरीकात में हिस्सा लेना शुरू किया तो कहते हैं बैअत के इबतिदाई दिनों की घटना है कि मेरी पत्नी को एक स्कूल के प्रोग्राम में तब्लीग़ी स्टॉल लगाना था, मैंने अपने काम से छुट्टी ले ली ताकि बच्चों को सँभाल सकूं। इस छुट्टी की वजह से सौ पाऊंड का नुक़्सान होना था। उस वक़्त के माली हालात अच्छे नहीं थे और हमारे लिए यह बहुत बड़ी रक़म थी। बहरहाल कहते हैं कि मैंने सोच कर कि अल्लाह तआला के काम के लिए छुट्टी लेनी है क़ुर्बानी देनी चाहिए तो मैंने रुख़स्त ले ली लेकिन अल्लाह तआला ने कुछ और सोच रखा था। कहते हैं जब मेरी पत्नी अपना काम ख़त्म करके घर पहुंची हैं तो मेरे बॉस का फ़ोन आया कि यदि हो सके तो एक घंटे में काम की जगह पहुंच जाओ क्योंकि एमरजैंसी काम आगया है। कहते हैं मैंने तुरंत रवानगी की। उस दिन केवल एक घंटा काम किया और पूरे दिन के पैसे सौ पाऊंड मिल गए। घर आकर मैंने अपनी पत्नी को बताया। दोनों नए-नए अहमदी हुए थे। कई रोज़ तक हम अल्लाह तआला की तरफ़ से इनाम पा कर ख़ुश होते रहे और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते रहे।

वकीलुल माल तहरीक-ए-जदीद क़ादियान हैं : जमाअत अहमदिया करोलाई सूबा केराला, इंडिया के एक दोस्त हैं, बड़े साहिब हैसियत हैं। अच्छे कारोबारी हैं और तहरीक-ए-जदीद की अदायगी में ग़ैरमामूली जोश भी रखते हैं। हर वर्ष बड़ी रक़म पेश करते हैं। कहते हैं इस वर्ष कौरोना के हालात की वजह से माली वसायल ऐसे नहीं थे कि बड़ी रक़म दे सकें। हिस्सा आमद इत्यादि दूसरे चंदों की अदायगी तो कर दी लेकिन तहरीक-ए-जदीद की अदायगी के लिए गुंजाइश नहीं थी। कहने लगे कि हमेशा अल्लाह तआला चंदे की अदायगी की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाता है अभी बज़ाहिर कोई सूरत नज़र नहीं आ रही लेकिन बहरहाल विश्वास था कि अल्लाह तआला ज़रूर इंतिज़ाम कर देगा तो मैं अदा करूँगा। कहते हैं समापन से केवल दो दिन पहले दस लाख रुपय की बड़ी रक़म उन्होंने तहरीक-ए-जदीद में पेश की। कहते हैं जुमा के दिन मुरब्बी साहिब ने ख़ुतबा के दौरान चंदा तहरीक-ए-जदीद की अदायगी की तरफ़ फिर तवज्जा दिलाई और कुछ पुराने वाक़ियात मेरे ख़ुतबा में

से पढ़के उन लोगों को सुनाए। बहुत प्रभावित हुए और दस लाख के बजाय तक़रीबन अठारह लाख रुपय का चंदा पेश किया और इसके बाद उनको उम्मीद है कि एक प्राजैक्ट जो सरकारी था वह मिल जाएगा और यह कहते हैं यदि वह मुझे मिल गया तो तहरीक-ए-जदीद में और बड़ी रक़म भी अदा करूँगा। बहरहाल अमीरों में भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदियों में ऐसा वर्ग है जो क़ुर्बानी का जज़बा रखता है और जो पैसे आते हैं तो छुपाते नहीं बल्कि अल्लाह तआला के मार्ग में ख़र्च करने की कोशिश करते हैं।

बुर्कीना फासो के मुबल्लिग़ हबीब साहिब लिखते हैं कि एक मैंबर हमारे सूर्य सईदो (sore seydou) साहिब हैं। सतरह सौ फ्रॉंक सीफ़ा उनका बक़ाया था और वर्ष ख़त्म होने में केवल एक हफ़्ता बाक़ी रह गया था तो बहरहाल उन्होंने कोशिश कर के दो हज़ार सीफ़ा अदा कर दिया जो बक़ाया से कुछ अधिक था। कहते हैं कि चंदा अदा किए अभी एक घंटा भी नहीं हुआ था कि किसी वाक़िफ़ कार ने दस हज़ार फ्रॉंक मुझे भेज दिया और फिर एक घंटे में मज़ीद दस हज़ार फ्रॉंक सीफ़ा भेज दिया और साथ फ़ोन करके कहा कि यह कुल बीस हज़ार फ्रॉंक सीफ़ा बतौर तोहफ़ा मैंने तुम्हें भेजे हैं तो सईदो साहिब कहते हैं कि इस वाक़िफ़ कार ने आज तक मुझे कोई पैसे नहीं भेजे और यह पहली दफ़ा हुआ है। कहते हैं कि मैंने दो हज़ार फ्रॉंक बक़ाया अदा किया तो अल्लाह तआला ने बढ़ा कर बीस हज़ार फ्रॉंक सीफ़ा दो घंटे के अंदर अंदर अदा करवा दिया तो इस तरह लोगों के ईमान भी बढ़ते हैं।

सीरालीयून में एक जगह लुंगी (lungi) है। इस रीजन के मुअल्लिम अब्दुल्लाह साहिब लिखते हैं कि बड़ी आयु के एक मैंबर पी. जे. ऐम. काइन (Pa j.m.ka-ine) साहिब हैं। उनका पिछले वर्ष तहरीक-ए-जदीद का वादा पच्चीस हज़ार लीयून था और इस वर्ष उन्होंने वादा पच्चास हज़ार लीयून लिखवाया। वह माली लिहाज़ से मुश्किलात का भी शिकार थे जब तहरीक-ए-जदीद की वसूली के बारे में ऐलान किया गया तो उन्होंने लोकल मिशनरी से पूछा कि मेरा वादा कितना है? जब उन्होंने बताया कि पच्चास हज़ार लीयून तो बड़ी हैरत हुई। उन्होंने कहा यह किस तरह मैंने लिखवा दिया है। मैं तो ख़ुद अदा नहीं कर सकता। बहरहाल उनको कहा कि यह आपने ख़ुद ही लिखवाया है। बहरहाल ख़ामोश हो गए। अगले हफ़्ते कहते हैं अंसार की मीटिंग थी और आ कर बताया कि मेरे पास साठ हज़ार लीयून थे। बीस हज़ार लीयून मैं घर छोड़ आया हूँ और चालीस हज़ार लीयून चंदा तहरीक-ए-जदीद में अदा करने के लिए लाया हूँ। अब मेरे पास वापिस जाने का किराया भी नहीं है। बहरहाल कहते हैं मैंने उन्हें कहा कि आपने क़ुर्बानी की। अल्लाह तआला आपका इंतिज़ाम कर देगा। कहते हैं पैदल ही घर जा रहे थे कि रस्ते में एक पुराना जानने वाला मिल गया। बड़े अर्से बाद उससे मुलाक़ात हुई थी और दोस्त से बातें करते रहे। जब वह दोस्त जाने लगा तो जाते-जाते तीस हज़ार लीयून निकाल के उन बुज़ुर्ग को तोहफ़ा दे दिया। फिर यह बुज़ुर्ग वर्णन करते हैं कि इसके बाद एक जानने वाली महिला थीं उनका पता करने के लिए उनकी सेहत के बारे में पूछने के लिए घर चला गया। जब वहां से उठ कर जाने लगा तो उसने दस हज़ार लीयून दिया और कहने लगी यह किराया के तौर पर इस्तिमाल कर लें और कहते हैं अल्लाह तआला ने उनकी चंदे में दी हुई रक़म उनको उसी तरह लौटा दी। फिर उन्होंने इस से वादा भी पूरा कर दिया जो पच्चास हज़ार का था। फिर कहते हैं कि केवल यही नहीं इसके बाद एक और फ़ज़ल भी हुआ कि एक अज़ीज़ बैरून-ए-मुल्क रहता थे। उनका फ़ोन आया और उन्होंने कहा कि काफ़ी समय से आप से सम्पर्क नहीं हो सका और मैं आपको बतौर तोहफ़ा चार लाख लीयून भिजवा रहा हूँ। केवल बराबर की रक़म नहीं दी बल्कि दस गुना बढ़ा के भी अल्लाह तआला ने प्रदान करवा दी और इस तरह कहते हैं कि मुझे अपनी क़ुर्बानी करने की भी तौफ़ीक़ मिल गई और मेरे ईमान में भी इज़ाफ़ा हुआ।

फिर गिनी कनाकरी का बोके (boke) है। वहां के एक गांव के मिशनरी कहते हैं कि तहरीक-ए-जदीद के चंदों की वसूली के सिलसिला में हफ़्ता तहरीक-ए-जदीद मनाया गया। ख़ुतबा जुमा में तवज्जा दिलाई। इन्फ़िरादी तौर पर घरों में दौरा भी किया। एक मुख़लिस अहमदी दोस्त जिब्रील साहिब हैं जो पेशे के लिहाज़ से बढ़ई हैं। उनके घर गए और उन्हें चंदे की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाई तो उन्होंने कहा कि मैंने आज के अख़राजात के लिए बीस हज़ार फ्रॉंक रखे हुए थे वे मैं सब चंदे में अदा करता हूँ। अब इसके अतिरिक्त हमारे पास कुछ नहीं लेकिन दुआ है कि अल्लाह तआला हमारी क़ुर्बानी क़बूल फ़र्मा ले। जिब्रील साहिब बताते हैं कि पिछले तीन माह से उन्होंने एक लकड़ी का बैड फ़रोख़्त करने के लिए तैयार किया हुआ था लेकिन कोई ख़रीदार नहीं आ रहा था। चंदे की अदायगी के कुछ ही देर बाद एक व्यक्ति बैड ख़रीदने आ गया और उसने एक मिलियन और पाँच लाख फ्रॉंक में वह ख़रीद लिया। इस पर जिब्रील साहिब ने तुरंत हमारे मिशनरी को फ़ोन किया कि अल्लाह तआला ने न केवल हमारी क़ुर्बानी को स्वीकार किया बल्कि कई गुना बढ़ा कर उसने हमें लौटा दिया है और यह बात वह अपने दोस्तों को भी बताते हैं ताकि उनके भी ईमान मज़बूत हों।

मुनीर हुसैन साहिब फ्री टाउन सेरा लिओन के मुबल्लिग़ हैं। कहते हैं कि ख़ादिम सूफ़ी सोंगो (sufi songo) साहिब पढ़ाई कर रहे हैं। विद्यार्थी हैं और पढ़ाई के सिलसिला में मस्जिद में मुक़ीम हैं। जब उन्होंने मेरा ख़ुतबा सुना। रिकार्डिंग सुनी होगी या पिछले वर्ष का तहरीक-ए-जदीद का ख़ुतबा सुना होगा जिसमें माली क़ुर्बानी करने वाले लोगों का मैंने वर्णन किया था तो कहते हैं मैंने बड़ी ध्यान से सारा ख़ुतबा सुना और मेरे अंदर इस बात का बहुत जोश और जज़बा पैदा हुआ कि काश में भी माली क़ुर्बानी में हिस्सा ले सकता लेकिन मुश्किल यह थी कि मैं विद्यार्थी हूँ और कोई भी काम नहीं करता और पढ़ाई का ख़र्चा भी मुश्किल से पूरा होता है लेकिन इन समस्त मुश्किलात के बावजूद मेरे अंदर बहुत बेकरारी पैदा हुई। मैंने सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद को अपना पाँच लाख लीयून का वादा लिखवा दिया जो कि मेरे लिए बहुत मुश्किल था। इसके बाद मैं उनकी अदायगी के लिए कुछ परेशान हुआ और रात-दिन मैंने दुआएं करनी शुरू कर दीं। अल्लाह तआला कोई सामान पैदा फ़रमाए और मैं अपना वादा पूरा कर सकूँ। इसलिए कुछ दिनों के बाद मेरा एक रिश्तेदार अपने बेटे को लेकर आया कि उसे अहमदिया स्कूल में दाख़िल करवाना है। मैंने स्कूल के प्रिंसिपल से बात की तो उन्होंने बच्चे को दाख़िला दे दिया। बच्चे के पिता ने मुझे एक लाख लीयून दिए और कहा कि तुम्हारे खाने इत्यादि के काम आएँगे यह रख लो। उस दिन कहते हैं मेरे पास खाने के लिए भी कुछ नहीं था लेकिन मैंने यह सारी रक़म चंदा तहरीक-ए-जदीद में अदा कर दी कि वादा जो है उस का कुछ हिस्सा तो पूरा हो। कुछ दिन बाद कहते हैं कि एक नामालूम नंबर से फ़ोन आया कि एक काम करना है और इस का अच्छा मुआवज़ा भी अदा करेंगे। क्या तुम तैयार हो? मैंने तुरंत हामी भर ली और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस काम के मुआवज़ा के तौर पर मुझे एक मिलियन लीयून मिले जिस से मैंने अपना वादा तहरीक-ए-जदीद फ़ौरी तौर पर अदा कर दिया।

गीबोन के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं एक नई अहमदी ईसा दीनदाने (issa dindane) साहिब हैं। उन्होंने बताया कि बैअत और बाक़ायदगी के साथ चंदा की अदायगी से पूर्व मेरी हालत यह थी कि कभी कबार दो हफ़्ते या तीन हफ़्ते गुज़र जाते थे परन्तु काम नहीं मिलता था परन्तु जब से बाक़ायदगी से चंदा अदा करना शुरू किया है तो अब तक़रीबन रोज़ाना ही काम मिल जाता है और यह बड़ी दूर से आ कर बाक़ायदा चंदा अदा करते हैं बल्कि जितना चंदा अदा करते हैं उतना ही टैक्सी का किराया भी देते हैं अब उनका इंतिज़ाम किया गया है कि बजाय दोहरा ख़र्च करने के अपने घर से ही चंदा भिजवा दिया करें।

अरदन से एक महिला फ़ज़्र अताया साहिबा कहती हैं कि मुझे अहमदियत में दाख़िल हुए बाईस वर्ष हो गए हैं। जब से मैं अहमदी हुई हूँ मैंने देखा है कि मैं जब भी चंदा देने की नीयत करती हूँ अल्लाह तआला ग़ैब से सहायता फ़र्मा कर पैसों का इंतिज़ाम कर देता है। कई दफ़ा तो बिल्कुल उतने ही पैसे आ जाते हैं जितने चंदा देने की नीयत होती है। यह जमाअत की बरकत है। कहती हैं मैंने इंजनीयरिंग की हुई है। घर पर ही कुछ काम मिल जाए तो कर लेती हूँ। मेरी आदत है कि चंदा जात के लिए अपने पति से पैसे नहीं लेती क्योंकि अधिकतर उनका हाथ तंग होता है बल्कि अपनी ज़ाती कमाई से चंदा देती हूँ। इस वर्ष मैंने समझा कि मैंने तहरीक-ए-जदीद में चंदा अदा कर दिया है लेकिन दरहक़ीक़त में भूल गई थी। जब याददहानी करवाई गई तो मेरे पास एक दीनार भी नहीं था। मैं इसी फ़िक्र में थी कि चंदा कैसे अदा होगा? लेकिन एक तालिबा मेरे पास आई कि मुझे टीयूशन पढ़ा दिया करें। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से टीयूशन फ़ीस से चंदा भी अदा हो जाएगा और कुछ बच भी जाएगा।

बुर्कीना फासो बोकोबदअला (bokubadala) एक जमाअत है। वहां के सदर जमाअत वर्णन करते हैं कि मेरे पास कुछ ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त आए और कहने लगे कि हम लोग आप लोगों की फसलों को देख कर हैरान हैं क्योंकि हमने देखा है कि आप लोगों ने जमाअत के तामीर होने वाले स्कूल में अधिक वक़्त दिया है जबकि आपकी फसलों की देख-भाल करने वाला पीछे कोई नहीं था लेकिन बावजूद इसके आपकी फ़सलें हमारी निसबत अधिक अच्छी हैं। इसके विपरीत हम लोगों ने अपना सारा वक़्त अपनी ज़मीनों को दिया है लेकिन फिर भी हमारी फ़सलें

इतनी अच्छी नहीं हुईं जितनी आप लोगों की हुई हैं। इस पर सदर साहिब ने उन्हें बताया कि हम सब लोगों ने यह वक़ार-ए-अमल अल्लाह तआला और जमाअत के लिए किया था और जितना वक़्त हम स्कूल को देते थे साथ यह दुआ भी करते थे कि अल्लाह तआला तू ही हमारी फसलों की रक्षा करना क्योंकि हम ने तुझ पर ही विश्वास किया है। इसलिए अल्लाह तआला ने हमारी दुआओं को सुन लिया और हमारी फ़सल भी अच्छी हो गई और अब हम ने चंदा भी इसके अनुसार अदा कर दिया।

बच्चे भी किस तरह क़ुर्बानी का शऊर रखते हैं। ऐसे बच्चे जो ग़रीब देशों में हैं और ऐसा शऊर है कि तरक़्क़ी याफताह देशों के बच्चों को, पढ़े लिखे बच्चों को भी कुछ जगह यह शऊर नहीं है। इस का वाक़िया यूं है कि हुसैन यूसुफ़ साहिब ज़ंजबार के इलाक़े के मुबल्लिग़ कहते हैं। बच्चे मस्जिद से बाहर खेल रहे थे तो एक बुज़ुर्ग वहां से गुज़रे उन्होंने ख़ुश हो कर बच्चों को टॉफ़ीयां ख़रीदने के लिए चौदह सौ शिलंग दिए। बच्चे पैसे लेकर एक अहमदी दुकानदार के पास गए और उन पैसों के सिक्के तबदील करवा लिए। छोटा चेंज करवा लिया। और अपने अपने हिस्सों के पैसे बजाय टॉफ़ीयां ख़रीदने के चेंज करा लिए। नोट तुड़वा लिया और सब बच्चे सिक्के लेकर मस्जिद आए और अपने अपने हिस्से के पैसों में से एक एक सौ शिलंग चंदा अदा किया और बड़ी ख़ुशी से अपनी अपनी रसीद अपने पास रखी। जब अहमदी दुकानदार को ज्ञान हुआ कि बच्चों ने चंदा अदा करने के लिए सिक्के तबदील करवाए थे तो उसकी भी हैरत की इंतिहा नहीं रही। और यही बच्चे हैं जो इंशा अल्लाह जमाअत अहमदिया की मज़बूत बुनियादें बन जाऐंगे।

फिर बच्चों की क़ुर्बानी का एक और अजीब नज़ारा है। यह भी तनज़ानिया का ही है। इसके बारे (samuye) के मुअल्लिम लिखते हैं कि जमाअत में तीन बच्चे हैं जो चौथी जमाअत में पढ़ते हैं, बाक़ायदगी से मस्जिद में शिक्षाी और तर्बीयती क्लासिज़ में शामिल होते हैं। तीनों बच्चों के घराने माली लिहाज़ से ग़रीब हैं। कोई मुस्तक़िल आमदनी का माध्यम नहीं। पिछले माह से यह आपस में मुक़ाबला करते थे और मुक़ाबले में चंदा तहरीक-ए-जदीद अदा करने की तरफ़ उनकी दौड़ लगी हुई थी। हर एक अलैहदगी में अपना चंदा लाता था और कोशिश करता था कि जितनी भी रक़म उसके पास मौजूद है वह अदा करे और इस तरह उन्होंने किसी ने पाँच सौ, किसी ने चार-सौ, सात सौ शीलांग जो भी उनके पास था दिया और कहते हैं कि जब एक दफ़ा मैंने उनसे पूछा कि तुम जो यह चंदा तहरीक-ए-जदीद लाते हो, यह पैसे कहाँ से ले के आते हो? एक ने बताया कि अपनी पिता के साथ जंगल में लकड़ियाँ काटने में सहायता करवाता हूँ तो जेब ख़र्च के तौर पर जो पैसे मिलते हैं इस में से चंदा तहरीक-ए-जदीद के लिए रख लेता हूँ और कहते हैं कि जब से मैंने चंदा अदा करना शुरू किया है हमेशा लकड़ियों के गाहक फ़ौरी तौर पर मिल जाते हैं और कभी नुक़्सान नहीं हुआ। दूसरे बच्चे ने बताया कि वह भी अपनी जेब ख़र्च में से चंदे की रक़म अलग करता है। तीसरे बच्चे ने बताया कि उसके घर के क़रीबी दरख़्तों पर फल इत्यादि लगते हैं। कभी-कबार वह अपने खाने के लिए फलों से ज़ायद को बेच भी देता है जिससे हासिल होने वाली रक़म से चंदा अदा कर देता है। इन तीनों बच्चों ने चंदे की बरकात का भी वर्णन किया किस तरह चंदा की अदायगी से उनकी ज़िंदगी में सुकून महसूस होता है। अल्लाह तआला इन बच्चों को ईमान और इख़लास में बढ़ाता चला जाए। यह है ईमान जिससे हमारे बच्चे भी मज़ा लेते हैं।

बेलीज़, दुनिया के बिल्कुल दूसरे कोने से एक और बच्चे की मिसाल। एक, एक कोना, एक दूसरा कोना लेकिन सोचें कैसी एक जैसे उदाहरण हैं। मुबल्लिग़ इंचार्ज बेलीज़ लिखते हैं कि बेलीज़ में एक चौदह वर्ष के बच्चे ने मस्जिद की तामीर के दौरान अपनी सारी जमा पूँजी मस्जिद के लिए पेश की। उसने तहरीक-ए-जदीद में भी क़ुर्बानी की एक आला मिसाल पेश की है। बच्चा बहुत ग़रीब है। बहुत ग़रीब घराने से उसका ताल्लुक़ है। मुश्किल से उनके पिता घर की ज़रूरीयात पूरी करते हैं। कहते हैं जब मुरब्बी साहिब ने तहरीक-ए-जदीद के महत्तव के बारे में बताया तो उस बच्चे ने एक डालर पेश किया और कहा कि यह मेरे घर वालों की तरफ़ से है और मुरब्बी साहिब बहुत ख़ुश हुए क्योंकि उनके लिए माली लिहाज़ से इतनी क़ुर्बानी करना भी बहुत बड़ी बात थी लेकिन इस बच्चे दानियाल ने कहा कि मेरा नाम इस में न लिखें। मैंने अपने घर वालों की तरफ़ से दिया है। मैं अपना हिस्सा बाद में दूँगा। इसलिए अगले दिन इस बच्चे ने मज़ीद दस डालर पेश किए और कहा मुझे विश्वास है कि अल्लाह हमारे घर वालों पर ज़रूर फ़ज़ल करेगा। अपनी तरफ़ से भी साथ ही पेश कर दिए।

किस तरह अल्लाह तआला नए शामिल होने वालों के दिल में क़ुर्बानी का जोश पैदा फ़रमाता है और किस तरह उन्हें नवाज़ता है। इस बारे में मराक़श के एक साहिब नूरुद्दीन साहिब हैं 2017 ई. में बैअत के बाद माली क़ुर्बानी में हिस्सा लेना शुरू किया तो उस वक़्त मेरी आमदन बिल्कुल मामूली थी। कहते हैं एक दिन जमाअत की वेबसाइट पर उन्होंने मेरा ख़ुतबा सुना जहां मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा और अन्य अहमदियों की माली क़ुर्बानियों का बता रहा था। तो कहते हैं कि इस से मेरे दिल में एक जोश पैदा हुआ और कुछ दिन के बाद सदर जमाअत मराक़श से मैंने कहा कि मैं निज़ाम-ए-वसीयत में शामिल होना चाहता हूँ। उन्होंने कुछ शरायत और फ़रायज़ बताए जिससे मेरा जोश मज़ीद बढ़ा और वसीयत कर ली। फिर कुछ माह बाद मेरे हालात बेहतर हो गए और मुझे एक कंपनी में अच्छी तनख़्वाह वाला जॉब मिल गया। मैं अब उसी कंपनी में एक और शहर में बतौर मैनेजर काम कर रहा हूँ। मेरी तनख़्वाह केवल तीन वर्ष में तीन गुना हो चुकी है। कंपनी का एतिमाद मुझ पर इस हद तक बढ़ा कि जब मैं मराक़श के दारुल हकूमत से दूसरे शहर जाने लगा तो मुझे मैनेजर ने कहा कि यदि तुम्हारी तरह काम करने वाला कोई और अहमदी हो और जॉब चाहता हो तो बताओ। कहते हैं यह सुनकर में बड़ा जज़बाती हुआ। आँखों में आँसू आए। मैंने अपने शहर के एक अहमदी दोस्त से बात की और उसे यह जॉब मिल गई। उसे भी अब मैनेजर बना दिया गया है। तो कहते हैं चंदा देने की वजह से मेरी फ़ैमिली का मुझ पर प्रैशर है और कुछ रिश्तेदारों की तरफ़ से भी इस्तिहज़ा का सामना है लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि मुझे चंदे की अदायगी की वजह से कभी माली मुश्किलात का सामना नहीं करना पड़ा।

आस्ट्रेलिया के मुरब्बी साहिब प्रथ से लिखते हैं कि एक ख़ादिम है जिसने अभी इस वर्ष का तहरीक-ए-जदीद का चंदा अदा नहीं किया हुआ था। चंदा अदा करने की तरफ़ तवज्जा दिलाई तो उसने बताया कि कोविड की वजह से काम नहीं मिला। माली मुश्किलात हैं लेकिन चंद दिनों बाद दुबारा मिला तो उसने बताया कि मैंने अपना चंदा पूरा करने के लिए घर का कुछ सामान था वह बेचा है ताकि चंदा अदा कर सकूँ और कहते हैं जैसे ही मैंने ऐसा किया अभी कुछ दिन गुज़रे थे कि मुझे काम के एतबार से चार नए कंट्रैक्ट मिल गए और साथ ही एक नई जॉब भी मिल गई जो एक्सपेंसज़, (all expenses paid job) थी और इस की इन्कम भी पहले से अधिक बढ़कर थी और फिर मैंने देखा कि यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है जो अपने घर का सामान बैच कर मैंने चंदा अदा किया था तो अल्लाह तआला ने तुरंत लौटा भी दिया।

फिर आस्ट्रेलिया साउथ के एक दूसरे शहर के सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद कहते हैं। एक मुख़लिस दोस्त का चंदा तहरीक-ए-जदीद बक़ाया था। जब तवज्जा दिलाई गई तो वह कहते हैं मैंने अपना घर बेचने के लिए लगाया हुआ है जूंही घर बिकेगा मैं अदायगी कर दूँगा। दो दिन के बाद उसको फ़ोन आया और उन्होंने कहा कि अल्लाह के फ़ज़ल से मेरा घर ग़ैर मुतवक़्क़े तौर पर मुनाफ़ा में बिका है और उन्हें विश्वास था कि चंदा की अदायगी के वादा की वजह से ऐसा हुआ है। इसलिए उन्होंने अपने वादे से छः गुना अधिक तहरीक-ए-जदीद में चंदा की अदायगी कर दी। अल्लाह तआला जब दुनियावी मुनाफ़ों से भी नवाज़ता है तो इस से भी एक अहमदी की इस तरफ़ तवज्जा होती है कि यह मेरे किसी कमाल की वजह से नहीं बल्कि क़ुर्बानी का नतीजा है और यह एक अहमदी की सोच है किसी और की यह सोच नहीं हो सकती।

अर्जनटाइन के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि मैं ने माली क़ुर्बानी की तरफ़ तवज्जा दिलाने के लिए एक मज़मून लिखा और इस में मेरे ख़ुतबा के यह शब्द लिखे कि नोमबाइअईन को बताया जाए कि माली क़ुर्बानी देनी ज़रूरी है। उनको बताएं कि तुम्हारे पास जो अहमदियत का संदेश पहुंचा है यह तहरीक-ए-जदीद में माली क़ुर्बानी करने वालों की वजह से पहुंचा है।

इसलिए इस में शामिल हों ताकि तुम अपनी ज़िंदगीयों को भी संवारने वाले बनो और इस संदेश को आगे पहुंचाने वाले भी बनो। यह इक़तिबास उन्होंने मेरे ख़ुतबा से लिया और प्रकाशित किया। कहते हैं जब यह मज़मून जमाअत के लोगों को भिजवाया गया तो एक ख़ादिम हज़िकील (anas ezequiel) साहिब ने मेरे से राबिता किया और कहा कि वह तहरीक-ए-जदीद के चंदे की अदायगी के लिए मिशन हाऊस आना चाहते हैं। सख़्त गर्मी के बावजूद स्कूल की छुट्टी के तुरंत बाद पब्लिक बस पर एक घंटे से ज़ायद यात्रा कर के वह मिशन हाऊस पहुंचे और एक हज़ार अर्जेंटिन पेसू (argentine peso) तहरीक-ए-जदीद के लिए पेश किए। कहते हैं मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उनकी आर्थिक हालात ऐसे नहीं थे और अभी ख़ुद

स्कूल के विद्यार्थी हैं। उनकी आमद का ख़ास माध्यम भी नहीं था। फ़ैमिली के हालात भी इतने अच्छे नहीं थे। कहते हैं पैसों की क़िल्लत की वजह से इस दिन उन्हों ने ख़ुद भी दोपहर का खाना नहीं खाया हुआ था। पूछने पर उन्होंने बताया कि उनके दिल पर ख़लीफ़ा वक़्त के इस इक़तिबास ने ख़ास प्रभाव पैदा किया है कि नए अहमदियों को भी तहरीक-ए-जदीद में इसलिए शामिल होना चाहिए क्योंकि उन तक अहमदियत का संदेश तहरीक-ए-जदीद के माध्यम से पहुंचा है। कहने लगे कि एक तरफ़ मैंने ये शब्द पढ़े और दूसरी तरफ़ उसी दिन क़ुरआन की आयत का मुतआला किया जिसमें अल्लाह तआला फ़रमाता है कि शुहदा और उनकी क़ुर्बानियों को फ़ौत शूदा मत ख़्याल करो बल्कि वह हमेशा के लिए ज़िंदा हैं। कहने लगे कि मेरे दिल में यह ख़ाहिश पैदा हुई कि मैं भी ऐसी क़ुर्बानी करूँ जिसके फ़वायद और नतायज मेरे फ़ौत होने के बाद भी ज़िंदा रहें। कहने लगे कि मेरी फ़ैमिली ने जो सब ग़ैर मुस्लिम हैं मेरी सालगिरा के अवसर पर कुछ रक़म तोहफ़ा के तौर पर दी थी। इसलिए इस रक़म में से जो भी मेरे पास उस वक़्त बाक़ी था वह सब का सब मैंने तहरीक-ए-जदीद में पेश कर दिया है ताकि इस रक़म से दूसरों तक अहमदियत का संदेश पहुंच सके जिस तरह कि मुझ तक पहुंचा है। यह है जो अहमदियत क़बूल करने के बाद लोगों में इन्क़िलाबी हालत पैदा होती है।

नए अहमदी हों या पुराने, कोई भी जब सुनता है कि जमाअत अहमदिया किस तरह पैसे ख़र्च करती है और कहाँ-कहाँ ख़र्च करती है तो इसका एक विशेष प्रभाव होता है। जिन जमाअतों में इस तरफ़ तवज्जा कम है यदि वह इस तरफ़ तवज्जा दें और उद्देश्य और महत्तव बताएं तो उनके चंदे बढ़ सकते हैं। बहरहाल लाइबेरिया का एक वाक़िया है। एक लोकल मुअल्लिम मुर्तज़ा साहिब हैं और एक ऐसी जमाअत में हैं जहां अधिकतर नए अहमदी हैं और ईसाइयत से इस्लाम में दाख़िल हुए हैं। वे बताते हैं कि तहरीक-ए-जदीद के सिलसिला में अपनी एक जमाअत के दौरे पर गए जिस वक़्त वह गांव पहुंचे तो दोपहर का वक़्त था। अधिकतर लोग बाहर अपने खेतों में काम के लिए गए हुए थे। उन्होंने वहां मौजूद लोगों को बताया कि मैं आज रात यहीं क़ियाम करूँगा और उस वक़्त तक वापिस नहीं जाऊँगा जब तक सौ फ़ीसद अहबाब इस बाबरकत तहरीक में शामिल नहीं हो जाएं। रात को जब सब लोग गांव वापिस आए तो उन्होंने सारी जमाअत के सामने तहरीक-ए-जदीद की अज़ीम तहरीक का महत्त्व वर्णन किया और सबको शामिल होने की तहरीक की। अल्लाह के फ़ज़ल से सब अहबाब ने और महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर इस में हिस्सा लिया। अगली सुबह जब वापस जाने लगे तो किसी ने कहा कि एक दोस्त अलफांसो साहिब हैं जो दो माह से बाहर अपने खेतों में रह रहे हैं और वे तहरीक-ए-जदीद में शामिल नहीं हुए लेकिन आप उनके पास पहुंच नहीं सकते क्योंकि एक तो उनकी ज़मीन बहुत दूर है। दूसरे बारिशों की वजह से रास्ता भी बंद है। मुअल्लिम साहिब ने कहा कि मैं उनके पास भी पहुँचूँगा ताकि आपकी जमाअत के सौ फ़ीसद अहबाब इस बाबरकत तहरीक में शामिल हों। जमाअत के लोग ने रोकने की कोशिश की लेकिन उन्होंने इसरार किया। कुछ दोस्त बहरहाल उनके साथ हो लिए। अढ़ाई घंटे के पैदल सफ़र के बाद जब ये लोग अलफांसो साहिब के पास पहुंचे तो उनको भी हैरत हुई और ख़ुशी भी हुई। फ़ौरी तौर पर उन्होंने तहरीक-ए-जदीद का चंदा अदा किया। अलफांसो साहिब के बीवी बच्चे भी उनके साथ ही मुक़ीम थे। बीवी अभी अहमदी नहीं हुई थी। यह सारा दृश्य देख कर उस की बीवी ने कहा कि मैं अहमदियों के दीन की ख़िदमत के जज़बा से बहुत प्रभावित हुई हूँ इसलिए आज से मैं भी इस जमाअत में दाख़िल होती हूँ और मेरे बच्चे भी इस जमाअत का हिस्सा होंगे। इस तरह उसकी बरकत से एक ख़ानदान को अहमदियत में शामिल होने की भी तौफ़ीक़ मिल गई।

बैत में आने के बाद किस तरह लोगों को इदराक होता है कि माली क़ुर्बानी किस क़दर ज़रूरी है। माली से एक मुबल्लिग़ हैं : एक रीजन में एक साहिब सेडो साहिब हैं। एक दिन अहमदिया मिशन हाऊस में तशरीफ़ लाए और यह कहते हुए अपना तहरीक-ए-जदीद का चंदा पेश किया कि तहरीक-ए-जदीद का वर्ष ख़त्म होने वाला था और मैं काफ़ी दिनों से परेशान था कि ख़ुदा तआला मुझे तौफ़ीक़ दे और मैं तहरीक-ए-जदीद का किया हुआ वादा पूरा कर सकूँ और आज मुझे ख़ुदा तआला ने तौफ़ीक़ दी है और मैं आया हूँ। एक टांग से विकलांग थे। उनको जब कहा गया कि आपने क्यों तकलीफ़ की, बता देते हम ख़ुद आपके पास पहुंच जाते। तो बड़े जोश से बोले कि मैंने इमाम महदी को माना है और मैं ज़ाहिरी जिस्मानी कमज़ोरी के बावजूद अपने आपको कुछ तंदरुस्त लोगों से अधिक बेहतर समझता हूँ और ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से दीन का दर्द रखता हूँ और शायद ऐसी हालत मैं मेरा ख़ुदा तआला के दीन की बेहतरी के लिए यहां तक पैदल चल कर आना अल्लाह तआला के हाँ मक़बूल हो जाए और मेरी बख़शिश का माध्यम हो जाए।

बेनिन से मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक लोकल मुअल्लिम मौतोवामा (moutowama) हैं। उन्होंने बताया कि वह अपने ज़ोन की एक नई अहमदी जमाअत में दौरे पर गए। वहां के सदर जमाअत इस्माईल साहिब ने कहा हम शुरू से मुस्लमान हैं और हमेशा हर वर्ष कुछ न कुछ माली क़ुर्बानी या अल्लाह के मार्ग के नाम पर अल्लाह के मार्ग में अपने इमाम को देते चले आए हैं। यह पहला वर्ष था कि हम अहमदी हुए हैं और पहली बार हमने जमाअत अहमदिया में माली क़ुर्बानी की है। इससे पूर्व इमाम को हम जो भी देते थे वह उन्ही के तसर्रुफ़ में आता था लेकिन जब हमने जमाअत अहमदिया के मुबल्लिग़ सिलसिला से माली क़ुर्बानी में दी जाने वाली रक़म के मसारिफ़ के सम्बन्ध में प्रश्न किया और जवाब में जो अज़ीमुश्शान मसारिफ़ उन्होंने हमें माली क़ुर्बानी के बताए इससे हम अपरिचित थे। जमाअत इस मामूली सी दी गई रक़म को भी ज़ाए नहीं करती बल्कि इस मामूली दी गई रक़म को भी पूरी दुनिया में होने वाले छोटे बड़े हर तरह के समाजी कामों और इस्लाम के प्रचार में खर्च करती है और एक व्यक्ति जो कुछ भी चंदा देता है वह उसका बेहतरीन प्रतिफल पाता है। इसलिए क़ुर्बानी के इस फ़लसफ़े को समझ कर हमने तहरीक-ए-जदीद में चंदा दिया और हमने महसूस किया कि इस वर्ष हमारे घरों में माली मुश्किलात भी नहीं आएं और हमारी और हमारे बच्चों की सेहत पर जो हम आए दिन ख़र्च करते थे वह भी इस वर्ष नहीं करना पड़ा। हमारी नमाज़ों की हाज़िरी पहले से बेहतर हो गई है और अल्लाह तआला ने हमारी रक्षा फ़रमाई है और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस बार माली क़ुर्बानी के बाद हमें दिली सुकून और संतोष भी था कि हमारी क़ुर्बानी व्यर्थ नहीं गई। अब लोग कहते हैं कि जो अफ़्रीक़ा में रहने वाले दूर दराज़ के अनपढ़ लोग सोच ही नहीं रखते। यह ऐसी पुख़्ता सोच और ऐसे उच्च ख़्यालात हैं कि बड़े पढ़े लिखे लोगों के भी ज़हनों में नहीं आते। किस तरह उन्होंने सारा कुछ वर्णन किया और माली क़ुर्बानी की महत्तव किस तरह उन पर वाज़िह हुई। यह है इन्क़िलाब जो बैअत के बाद लोगों में पैदा हो रहा है।

अल्लाह तआला हम में से हर एक को इस्लाम की इशाअत के लिए क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और अपनी पाक कमाई से क़ुर्बानी करने वाले हों। अल्लाह तआला के हाँ यह क़ुर्बानी मक़बूल भी हो और अल्लाह तआला हमसे राज़ी हो।

अब मैं तहरीक-ए-जदीद के नए वर्ष का ऐलान भी करूँगा और कुछ कवायफ़ भी पेश करूँगा। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सत्तासीवां (87) साल 31 अक्तूबर को ख़त्म हुआ था। अठासीवां (88) साल शुरू हो चुका है और अल्लाह के फ़ज़ल से तहरीक-ए-जदीद के माली निज़ाम में जमाअत को 15.3 मिलियन पाऊंड की माली क़ुर्बानी की तौफ़ीक़ मिली जो पिछले वर्ष से आठ लाख बयालिस हज़ार पाऊंड अधिक है।

जर्मनी दुनिया-भर की जमाअतों में नुमायां तौर पर आगे है। पाकिस्तान के आर्थिक

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हालात भी ख़राब हैं। क़ुर्बानियों में तो वे बढ़ते हैं। उनके लिए भी दुआ करें। अतिरिक्त इसके आजकल वैसे भी मुश्किलात में गिरफ़्तार हैं। आए दिन कोई न कोई मुक़द्दमे बाज़ी और किसी न किसी के ख़िलाफ़ केस बनता रहता है और क़ानून जो है वह उनको जितना दबा सकता है, तंग कर सकता है, करने की कोशिश करता है। अल्लाह तआला उनकी परेशानियों को भी दूर करे और वे भी आज़ादी से समस्त activities कर सकें। इजतिमाआत भी हों। जलसे भी हों और खुल कर अपनी क़ुर्बानियों के इज़हार भी कर सकें। वे तो इज़हार नहीं करेंगे लेकिन उनके इज़हार हम कर सकें। मजबूरियों की वजह से उनकी कुछ क़ुर्बानियों का वर्णन भी नहीं किया जा सकता।

बहरहाल इसके अतिरिक्त जो क़ुर्बानी करने वाले हैं जर्मनी का तो मैंने बताया नंबर एक है। इस के बाद बर्तानिया है। फिर अमरीका नंबर तीन पर है। नंबर चार पर कैनेडा। नंबर पाँच पर मिडल ईस्ट की एक जमाअत है। नंबर छ पर भारत है। नंबर सात पर आस्ट्रेलिया। नंबर आठ पर इंडोनेशिया। नंबर नौ पर घाना। नंबर दस पर फिर मिडल ईस्ट की एक जमाअत है।

अफ़्रीकन देशों में मजमूई वसूली के लिहाज़ से नुमायां पोज़ीशन जो है वह घाना की है। फिर नाईजेरिया की। फिर बुर्कीना फासो की। फिर तनज़ानिया की। फिर सेरा लिओन की। सेरा लिओन में पहले भी मैंने कहा था कि बेहतरी हो सकती है और बहुत बेहतरी की गुंजाइश है लेकिन जो तवज्जा देनी चाहिए वे दे नहीं रहे। यदि सही तरह लोगों को बताया जाए तो लोग क़ुर्बानी करने वाले हैं जैसा कि मैंने वाक़ियात बताए हैं। फिर गेम्बया है। फिर बेनिन। फिर योगंडा। फिर कीनीया। फिर लाइबेरिया।

शामिल होने वालो में इज़ाफ़े के लिहाज़ से नाईजेरिया नंबर एक पर है। फिर गेम्बया है। फिर सेनेगाल है। फिर घाना। फिर तनज़ानिया। फिर गिनी कनाकरी। मलावी। योगंडा। गिनी बसाऊ। कोंगो किंशासा। बुर्कीना फासो। कोंगो बराज़ा वेल।

और शामिल होने वालों में अफ़्रीक़ा के अतिरिक्त जो दूसरे मुल्क हैं उनमें बड़ी जमाअतों में जो बढ़ोतरी हुई है इस में जर्मनी नंबर एक पर है। फिर बर्तानिया है। फिर हॉलैंड है। फिर बंगलादेश है। फिर मारीशस है।

दफ़्तर अव्वल के खाते अल्लाह तआला के फ़ज़ल से समस्त जारी हैं।

जर्मनी की पहली दस जमाअतें जो हैं उनमें रौडमार्क (rödermark) नूइस् (neuss) महदी आबाद (mehdi-abad) कोलोन (köln) रोडगा (rodgau) निडा (nidda) फ्लोर्स हाइम (flörsheim) पिन बर्ग (pinneberg) फ़रानकंथाल (frankenthal) और ओसना ब्रूक (osnabrück)

जो पहली दस लोकल इमारतें हैं उनमें हैमबर्ग (hamburg) फ्रैंकफ़र्ट (frankfurt) ग्रोस गैराओ (gross-gerau) डटसन बाख (dietzenbach) वेज़ बादिन (wiesbaden) मोरफ़लडन (mörfelden) रीडसटड (riedstadt) मन हाइम (mannheim) डामसटड (darmstadt) और रोसलज़हायम (rüsselsheim)

पाकिस्तान में तहरीक-ए-जदीद की क़ुर्बानी में वसूली के लिहाज़ से लाहौर अव्वल है। फिर रब्वाह है। फिर कराची है। ज़िलों में इस्लामाबाद का ज़िला है। फिर गुजरांवाला। स्यालकोट है। फिर अमरकोट है। फिर मुल्तान है। टोबा टेक सिंह है। मीरपुर ख़ास है। अटक है। मीरपुर कश्मीर है और डेरा ग़ाज़ी ख़ान है।

और वसूली के एतबार से अधिक क़ुर्बानी करने वाली इमारत डीफ़ैंस लाहौर है। इमारत गुलशन इक़बाल कराची है। इमारत अज़ीज़ आबाद कराची है। इमारत टाउन शिप लाहौर है। इमारत मॉडल टाउन लाहौर है। इमारत मुग़ल पूरा लाहौर है। इमारत दिल्ली गेट लाहौर है। इमारत क्लिफ्टन कराची है। बहावल नगर शहर है। हाफ़िज़ आबाद शहर है।

पृष्ठ 11 का शेष

नशो नुमा पाता है। इसी तरह रूहानियत से सम्बन्ध रखने वाला दिमाग़ रुहानी आहारों से नशो नुमा पाता है। दूसरे इस तरफ़ संकते किया कि स्वभाव के अंदर चिंतन तो मौजूद होते हैं परन्तु उनके उभारने के लिए उचित आहार की ज़रूरत होती है इसी तरह रुहानी अफ़्क़ार भी इन्सान के अंदर मौजूद तो होते हैं परन्तु उनके उभारने के लिए भी रुहानी आहार की ज़रूरत होती है। सब इन्सान एक ही किस्म के हैं। परन्तु एक उत्तम स्थान की क़ुव्वत फ़िक्रिया रखता है दूसरा नहीं और इस का कारण यही होती है कि एक को मुनासिब आहार मिलती है दूसरे को नहीं यही हाल रुहानी आलम का है सब ही इन्सानों के अंदर अल्लाह तआला की मुहब्बत की भावन है लेकिन एक आदमी जो रुहानी आहार खाता है उस की क़ुव्वत-ए-फ़िक्रिया को प्रताप और रोशनी मिल जाती है दूसरे को नहीं।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, पृष्ठ 137 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

बर्तानिया के पहले पाँच रीजन जो हैं उनमें मस्जिद बैतुल फतूह रीजन है। फिर नंबर दो पर मस्जिद फ़ज़ल रीजन है। फिर इस्लामाबाद रीजन है। फिर मिडलैंडज़ (midlands) रीजन। बैतुल अहसान रीजन। और मजमूई वसूली के लिहाज़ से बर्तानिया की पहली दस बड़ी जमाअतें ये हैं फ़ारनहम (farnham) फिर इस्लामाबाद। फिर साउथ चीम (south cheam) फिर मस्जिद फ़ज़ल। फिर वोस्टर पार्क (worcester park) बर्मिंघम (birmingham) साउथ वॉलसॉल (south walsall) आलडर शॉट (aldershot) जलंघम (gillingham) गिल्ड फ़ोर्ड (guildford)

मजमूई वसूली के लिहाज़ से अमरीका की जो जमाअतें हैं वह हैं मेरी लैंड (maryland) लास एंजलेस (los angeles) डेट्रॉइट (detroit) सिलिकॉन वैली (silicon valley) शिकागो (chicago) सेयटल (seattle) सेंट्रल वर्जीनिया (central virginia) अवश् कोष (oshkosh) अटलांटा (atlanta) जॉर्जिया (georgia) फिर साउथ वर्जीनिया (south virginia) फिर हीवसटन (houston) फिर यार्क (york) फिर बोस्टन (boston)

वसूली के लिहाज़ से कैनेडा की लोकल इमारात हैं वान (vaughan) फिर पीस विलेज (peace village) और कैलगरी (calgary) दोनों बराबर हैं। फिर वेनकोवर (vancouver) फिर टोरांटो वैस्ट *(toronto west) फिर टोरांटो (toronto)

इंडिया की पहली दस जमाअतें जो हैं उनमें क़ादियान नंबर एक पर है। फिर कोइम्बटोर (coimbatore) है। फिर हैदराबाद है। फिर करोलाई (karulai) है। फिर पथ्थापीरम। कलकत्ता। बैंगलौर। केरिंग। कालीकट। मेला पालम। और क़ुर्बानी के लिहाज़ से जो सूबा जात हैं उनमें केराला नंबर एक पर है। फिर तामिल नाडू। फिर जम्मू कश्मीर। फिर कर्नाटक। तिलंगाना। उड़ीसा। पंजाब। बंगाल। दिल्ली। लक्षद्वीप।

आस्ट्रेलिया की पहली दस जमाअतें ये हैं मेलबर्न लॉंग वार्न (melbourne long warren) केसटल हिल (castle hill) मारसिडन पार्क (marsden park) मेलबर्न बेरोक (melbourne berwick) एडीलेड साउथ (adelaide south) पेनरथ (penrith) एक्ट कैनबरा (act canberra) पैरामाटा (paramatta) एडीलाइड वैस्ट (adelaide west) अल्लाह तआला समस्त क़ुर्बानी करने वालों के अम्वाल-ओ-नफ़ूस में बरकत प्रदान फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं देखता हूँ कि जिन और इन्स के शैतान उमर से भागते हैं

"उमर बिन ख़त्ताब मेरे साथ होता है जहां मैं पसंद करता हूँ और मैं उसके साथ होता हूँ जहां वह पसंद करता है
और मेरे बाद उमर बिन ख़त्ताब जहां होगा हक़ उसके साथ रहेगा (अल्हदीस)

संतुष्टि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान और दिल पर जारी होती है (हज़रतअली रज़ियल्लाहु अन्हु)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाया ये दोनों जन्नत के अव्वलीन और आख़रीन के समस्त बड़ी उमर के लोगों के सरदार हैं अतिरिक्त अम्बिया और मुर्सेलीन के

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं का वर्णन

पाँच मरहूमीन श्रीमान् कामरान अहमद साहिब शहीद आफ़ पिशावर, डाक्टर मिर्ज़ा नबीर अहमद साहिब और उनकी पत्नी श्रीमती आयशा अम्बर सय्यद साहिबा आफ़ अमरीका

श्रीमान् चौधरी नसीर अहमद साहिब आफ़ कराची और श्रीमती सरदारां बी-बी साहिबा आफ़ दारुल रहमत ग़र्बी रब्वाह का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 नवम्बर 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बों में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन हो रहा था। आज भी वही है। हज़रत हफ़सा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की पुत्री हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की दुनिया से और ज़ोहद का वर्णन करते हुए वर्णन फ़रमाती हैं कि उन्होंने एक दफ़ा अपने पिता से कहा हे अमीरुल मोमेनीन और एक रिवायत में यह है कि इस तरह मुख़ातब किया कि हे मेरे बाप अल्लाह ने रिज़्क़ को बड़ा किया है और आपको फ़ुतूहात प्रदान की हैं और कसरत से माल प्रदान किया है क्यों न आप अपने खाने से अधिक नरम ग़िज़ा खाया करें और अपने इस लिबास से अधिक नरम लिबास पहना करें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मैं तुमसे ही इस बात का फ़ैसला चाहूँगा। क्या तुम्हें याद नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ज़िंदगी में कितनी कष्ट झेलने पड़े। रावी कहते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो नियमति हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो को यह याद दिलाते रहे यहां तक कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो को रुला दिया। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम जहां तक मुझ में ताक़त होगी मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर की ज़िंदगियों की सख़्ती में शामिल रहूँगा ताकि शायद मैं इन दोनों की सकून की ज़िंदगी में भी शामिल हो जाऊं।

एक रिवायत में यह भी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि हे हफ़सा पुत्री उमर! तुमने अपनी क़ौम की भलाई तो की है लेकिन अपने बाप की ख़ैर ख़्वाही नहीं की। तुमने मुझे यह मश्वरा दिया कि यह होगा तो क़ौम की बेहतर ख़िदमत करूँगा लेकिन मेरी ख़ैर ख़्वाही नहीं है। और फिर फ़रमाया कि मेरे ख़ानदान वालों का केवल मेरी जान और मेरे माल पर हक़ है लेकिन मेरे दीन और मेरी अमानत में उनका कोई हक़ नहीं।

(अल्-तबकातुलकुबरा ले इब्ने साअद भाग 3, पृष्ठ 148 वर्णन हजर उमर बिन अल् ख़त्ताब प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

अर्थात जो अमानत मैं अदा कर रहा हूँ और जिस तरह अदा कर रहा हूँ, उस में मुझे तुम्हें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। इस बात में, इस बारे में कहना तुम्हारा कोई हक़ नहीं।

हज़रत अकर्मा बिन ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और इनके अतिरिक्त कुछ और लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से बात करते हुए कहा। अगर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ज़यादा अच्छा आहार खाएं तो हक़ के लिए काम करने में आप रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़यादा शक्तिशाली हो जाऐंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि क्या तुम सबकी यही राय है तो उन्होंने कहा हाँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारी भलाई समझ गया हूँ लेकिन मैंने अपने दोनों दोस्तों अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को उस रास्ते पर छोड़ा है कि यदि मैंने इन दोनों का वह रास्ता छोड़ दिया तो मैं उन दोनों से मंज़िल में नहीं मिल सकूँगा।

(तारीख़ अल ख़ुलफ़ा अज़ जलालुद्दीन सयूती पृष्ठ 101 उमर बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल किताब अल् अरबिया बेरूत लुबनान 1999 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना भय और खतरे का ज़माना था। उस वक़्त जो आपने मुस्लमानों को आदेश दिए थे हम उनसे सबक़ हासिल कर सकते हैं। आपका अपना तरीक़ भी यह था और हिदायत भी आपने यह कर रखी थी कि एक से अधिक सालन प्रयोग नहीं किए जाए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो अपने एक ख़ुतबे में तहरीक-ए-जदीद के सिलसिले में ही यह वर्णन कर रहे हैं। बहरहाल फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिदायत थी कि एक से अधिक सालन इस्तिमाल नहीं किया जाए और इस पर इतना ज़ोर देते थे कि कुछ सहाबा ने इस में बढ़ोतरी कर ली। इंतिहा से बढ़ गए। इसलिए एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने सिरका और नमक रखा गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि ये दो खाने क्यों रखे गए हैं जबकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने केवल एक खाने का हुक्म दिया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो से अर्ज़ किया गया, लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा ये दो नहीं बल्कि नमक और सिरका दोनों मिलकर एक सालन होता है। परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा नहीं। ये दो हैं। जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह कार्य रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत की भावना की वजह से बढ़ोतरी का पहलू रखता हुआ मालूम होता है। शायद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ये मंशा नहीं थी लेकिन इस उदाहरण से यह ज़रूर पता चलता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखकर कि मुस्लमानों को सादगी की ज़रूरत है इस की किस क़दर ताकीद की थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वाले मुतालिबे मैं नहीं करता और ये नहीं कहता कि नमक एक सालन है और सिरका दूसरा परन्तु यह मुतालिबा करता हूँ कि आज से तीन वर्ष के लिए जिसके दौरान मैं एक एक वर्ष के बाद दुबारा ऐलान करता रहूँगा ताकि अगर इन तीन सालों में हालत ख़ौफ़ के बदल जाए तो आदेश भी बदले जा सकें। हर अहमदी जो इस जंग में हमारे साथ शामिल होना चाहे यह इक़रार करे कि वो आज से केवल एक सालन इस्तिमाल करेगा। रोटी और सालन या चावल और सालन। ये दो चीज़ें नहीं बल्कि दोनों मिलकर एक होंगे लेकिन रोटी के साथ दो सालन हों या चावलों के साथ दो सालनों की इजाज़त नहीं होगी। (उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 15 पृष्ठ 426)

यह उस ज़माने की बात है जब तहरीक-ए-जदीद का ऐलान फ़रमाया था और उस वक़्त जमाअत को ज़रूरत थी तो तहरीक की कि अपने खर्चे कम कर के चंदा दो। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब हालात विपरीत हैं। इसलिए ये पाबंदी नहीं है लेकिन फिर भी फ़जूल खर्ची से काम नहीं लेना चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद आयत وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا (अल् फुर्कान : 68) की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर कोई अब्दुर्रहमान बनना चाहे तो उसके लिए यह भी शर्त है कि वह अपना माल ख़र्च करते वक़्त दो बातों का लिहाज़ करे। अव्वल यह कि वह अपने माल में इसराफ़ न करे। उसका खाना केवल् तकल्लुफ़ और मज़े के लिए नहीं होता बल्कि क़ुव्वत ताक़त और बदन को क़ायम रखने के लिए होता है। उसका पहनना आराइश के लिए नहीं होता बल्कि बदन को ढाँकने और ख़ुदा तआला ने जो उसे हैसियत दी है उसके महफ़ूज़ रखने के लिए होता है। इसलिए सहाबा का तर्ज़-ए-अमल बताता है कि वह इसी तरह करते थे। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक दफ़ा मुल्क शाम को तशरीफ़ ले गए वहां कुछ सहाबा ने रेशमी कपड़े पहने हुए थे। (रेशमी कपड़ों से मुराद वह कपड़े हैं जिसमें किसी क़दर रेशम था अन्यथा ख़ालिस रेशम के कपड़े के अतिरिक्त किसी बीमारी के कारण, मर्दों को पहनने मना हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साथियों से फ़रमाया कि इन लोगों पर ख़ाक फेंको अर्थात बुरा मनाया और उनसे कहा कि तुम अब ऐसे सहूलत पसंद हो गए हो कि रेशमी कपड़े पहनते हो। इस पर उन सहाबा में से एक ने कुरता उठा कर दिखाया तो मालूम हुआ कि उसने नीचे मोटी ऊन का सख़्त कुर्ता पहना हुआ था। उसने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बताया कि हमने रेशमी कपड़े इसलिए नहीं पहने कि हम उनको पसंद करते हैं बल्कि इसलिए कि इस मुल्क के लोगों की तर्ज़ ही ऐसी है। और यह बचपन से ऐसे आमीरों को देखने के आदी हैं जो निहायत शान-ओ-शौकत से रहते थे। अत: हम ने भी उनकी रियायत से अपने लिबासों को मुल्की सियासत के तौर पर बदला है अन्यथा हम पर उनका कोई असर नहीं। अत: सहाबा का अमल बताता है कि इसराफ़ से क्या अर्थ है। इस से यही अर्थ है कि माल ऐसी वस्तुओं पर न ख़र्च करे जिनकी ज़रूरत नहीं और जिनका मुद्दा केवल् आराइश और ज़ेबाइश हो। उद्देश्य ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि इबादुर्रहमान वे होते हैं जो अपने मालों में इसराफ़ नहीं करते।

जो मालों में इसराफ़ न करते हों वे अपने मालों को दिखावे के लिए ख़र्च नहीं करते हों बल्कि फ़ायदा और नफ़ा के लिए केवल करते हों। फिर अपने मालों को ऐसी जगह देने से न रोकें जहां देना ज़रूरी हो और उनका कव्वाम हो अर्थात मध्य का हो (इस फ़ायदा का ज़रीया बन रहा हो।) न अपने मालों को इस तरह लौटाएँ जो अल्लाह तआला की इच्छा के अधीन न हो और न इस तरह रोकें कि जायज़ हुक़ूक़ को भी अदा न करें। ये दो शर्तें इबादुर्रहमान के लिए माल ख़र्च करने के सम्बन्ध में हैं लेकिन बहुत लोग हैं जो या तो इसराफ़ की तरफ़ चले जाते हैं या कंजूसी की तरफ़ चले जाते हैं। (उद्धरित खुत्बाते महमूद, भाग 5 पृष्ठ 4-3)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दिखावे और शान-ओ-शौकत वाले लिबास के इस क़दर ख़िलाफ़ थे कि मफ़तूह दुश्मन के लिए भी यह पसंद नहीं करते थे कि वे कोई ऐसा लिबास पहन कर उनके सामने आए जो शान-ओ-शौकत वाला हो। इसलिए फ़ारसियों के सिपहसालार हुरमुज़ान के वाक़िया में इस की तफ़सील मिलती है। यह तफ़सील तो मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ। इस जगह मैं कुछ थोड़ा सा हिस्सा स्पष्ट करने के लिए वर्णन करता हूँ।

जब तुसतुर की विजय के वक़्त फ़ारसियों के सिपहसालार हुरमुज़ान ने हथियार फेंक दिए और ख़ुद को मुस्लमानों के हवाले कर दिया और उसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में मदीना भेज दिया गया तो मदीना में दाख़िल होने से पहले जो मुस्लमान ले जाने वाले थे उन्होंने उसे उसका रेशमी लिबास पहना दिया ताकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और मुस्लमान उसकी असल हैयत को देख सकें। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने वह आया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा क्या हुरमुज़ान है? लोगों ने कहा हाँ। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको और उसके लिबास को बग़ौर देखा और कहा मैं आग से अल्लाह तआला की पनाह में आता हूँ और अल्लाह से मदद मांगता हूँ। क़ाफ़िला के लोगों ने कहा कि यह हुरमुज़ान है। इस से बात कर लें। आपने कहा कदापि नहीं यहां तक कि वह अपना चमक धमक लिबास और ज़ेवरात उतार दे। यह सब कुछ उतारा गया और फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे बात की।

(उद्धरित सीरत अमीरुल मोमेनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ अल् सलाबी पृष्ठ 424 से 425 दारुल मारफ़ा बेरूत 2007 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आजिज़ी और तक़्वा के मयार के बारे में इस बात से अनुमान होता है। हज़रत उर्व: बिन ज़ुबेर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि मैं ने उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को कंधे पर पानी का एक मशकीज़ा उठाए हुए देखा तो मैंने कहा हे अमीरुल मोमेनीन आप रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए यह मुनासिब नहीं है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि जब वफ़ूद इताअत और फ़रमांबर्दारी का मुज़ाहरा करते हुए मेरे पास आए, मुख़्तलिफ़ क़ौमों के वफ़द जब इताअत का प्रदर्शन करते हुए आए तो मेरे दिल में अपनी बड़ाई का एहसास हुआ। इसलिए मैंने इस बड़ाई को तोड़ना ज़रूरी समझा।

(सीरत उमर बिन अल् ख़त्ताब अज़ अली पृष्ठ 122 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.)

यह बड़ाई क्यों पैदा हुई? इसलिए मैंने सोचा कि मैं फिर इसको इस तरह तोड़ूँ कि पानी का मशकीज़ा उठा कर ले के जाऊं।

हज़रत यहया बिन अब्दुर्रहमान बिन हातिब रज़ियल्लाहु अन्हो आपने पिता से रिवायत करते हैं कि हम लोग हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ मक्का से क़ाफ़िले की सूरत में वापस आ रहे थे यहां तक कि हम ज़जनान की घाटियों में पहुंचे तो लोग रुक गए। ज़जनान मक्का से पच्चीस मील की दूरी पर एक स्थान का नाम है। कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया मुझे इस जगह पर वह वक़्त भी याद है जब मैं अपने पिता ख़त्ताब के ऊंट पर होता था और वह बहुत सख़्त तबीयत के इन्सान थे। एक मर्तबा मैं उन ऊंटों पर लकड़ियाँ लेकर जाता था और दूसरी मर्तबा उन पर घास लेकर जाता था। आज मेरा यह हाल है कि लोग मेरे इलाक़े के दूर दराज़ में सफ़र करते हैं और मेरे ऊपर कोई नहीं। अर्थात मैं एक वसीअ-ओ-अरीज़ इलाक़े का हाकिम हूँ जिसमें लोग दूर दूर तक सफ़र करते हैं और मुझसे मिलने आते हैं और मेरे ऊपर दुनिया का कोई हुकमरान नहीं है जो मुझ पर हुकूमत करता हो। फिर यह शेअर पढ़ा। لَا شَيْءَ يَبْقَى الْإِلٰهُ وَ يُؤْدِي الْمَالُ وَ الْوَلَد فِيمَا تَرٰى إِلَّا بَشَاشَتَهُ

अर्थात जो कुछ तुम्हें नज़र आता है उसकी कोई हक़ीक़त नहीं अतिरिक्त एक आरिज़ी ख़ुशी के। केवल ख़ुदा की ज़ात बाक़ी रहेगी जबकि माल और औलाद फ़ना हो जाएगी। (अल्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साअद भाग 3 पृष्ठ 202 उमर बिन अल् ख़त्ताब प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)(फ़तह अलबारी भाग 2 पृष्ठ 144 प्रकाशन क़दीमी पुस्तक ख़ाना आराम बाग़ कराची)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो इस बारे में फ़रमाते हैं "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज से आते हुए एक दरख़्त के पास खड़े हो गए। हुज़ैफ़ा जो बे-तकल्लुफ़ था उसने साहस की और वजह पूछी आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि एक वक़्त था कि जब मैं अपने एक ऊंट को चराता था और उस दरख़्त के नीचे मेरे पिता ने मुझे बहुत सजा और फटकार लगाईं थी और अब यह वक़्त है कि ऊंट तो क्या कई लाख आदमी मेरी आँख के इशारे पर जान देने को हैं।''

(हक़ायकुल फुर्कान, भाग 3, पृष्ठ 326)

इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि ऊंटों के चराने वाला एक व्यक्ति अज़ीमुश्शान बादशाह बन गया और केवल दुनियावी बादशाह नहीं बना बल्कि रुहानी भी। यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो आयु के आरम्भ में ऊंट चराया करते थे। एक दफ़ा आप हज को गए तो रास्ता में एक मुक़ाम पर खड़े हो गए। धूप बहुत सख़्त थी जिससे लोगों को बहुत तकलीफ़ हुई लेकिन कोई यह कहने का साहस नहीं करता कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो वहां क्यों खड़े हैं। आख़िर एक सहाबी को जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बड़े दोस्त थे और जिनसे आप फ़ित्ना के मुताल्लिक़ पूछा करते थे लोगों ने कहा कि आप उनसे पूछें' हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछें "कि यहां क्यों खड़े हैं? उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया कि आगे चलिए यहां क्यों खड़े हो गए हैं। "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने'' फ़रमाया कि मैं यहां इस लिए खड़ा हुआ हूँ कि एक दफ़ा मैं ऊंट चराने की वजह से थक कर इस दरख़्त के नीचे लेट गया था। मेरा बाप आया और उसने मुझे मारा कि क्या तुझे इस लिए भेजा था कि वहां जा कर सोते रहना। तो एक वक़्त में मेरी यह हालत थी लेकिन मैंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़बूल

किया तो ख़ुदा तआला ने मुझे यह दर्जा दिया कि आज अगर लाखों आदमियों को कहूं तो वह मेरी जगह जान देने को तैयार हैं। इस वाक़िया से और तथा इस किस्म के और बहुत से वाक़ियात से मालूम होता है कि साहबा रज़ियल्लाहु अन्हु किस हालत में थे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुसरण से उनकी क्या हालत हो गई और उन्होंने वह दर्जा और इलम पाया जो किसी को हासिल नहीं था।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "यह क़िस्सा मैंने इस लिए सुनाया है कि देखो एक ऊंट चराने वाले को दीन और दुनिया के वे वे इलम सिखाए गए जो किसी को समझ नहीं आ सकते। एक तरफ़ ऊंट या बकरियां चराने की हालत को देखो कैसे इलम से दूर मालूम होती है और दूसरी तरफ़ इस बात पर ग़ौर करो कि अब भी जबकि यूरोप के लोग मुल्कदारी के क़वानीन से निहायत वाक़िफ़ और आगाह हैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बनाए हुए क़ानून को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं।

एक ऊंट का चरवाहा और सलतनत क्या ताल्लुक़ रखते हैं? लेकिन देखो कि उन्होंने वे कुछ किया कि आज दुनिया उनके आगे सिर झुकाती है और उनकी सियासत दानी की तारीफ़ करती है। फिर देखो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो एक मामूली ताजिर थे लेकिन अब दुनिया हैरान है कि उनको यह विवेक, यह बुद्धि और यह समझदारी कहाँ से मिल गई। मैं बताता हूँ कि उनको क़ुरआन शरीफ़ से सब कुछ मिला। उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ पर ग़ौर किया इस लिए उनको वे कुछ आ गया जो समस्त दुनिया को नहीं आता था क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ एक ऐसा हथियार है कि जब उसके साथ दिल को जोड़ा जाए तो ऐसा साफ़ हो जाता है कि समस्त दुनिया के उलूम उस में नज़र आ जाते हैं और इन्सान पर एक ऐसा दरवाज़ा खुल जाता है कि फिर किसी के रोके वे उलूम जो उसके दिल पर नाज़िल किए जाते हैं नहीं रुक सकते। अत: हर एक इन्सान के लिए ज़रूरी है कि वह क़ुरआन को पढ़ने और ग़ौर करने की कोशिश करे।''

(अनवार-ए-ख़िलाफ़त, अनवारुल उलूम भाग 3 पृष्ठ 130-131)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की विनम्रता और सादगी के बारे में एक रिवायत में इस तरह वर्णन मिलता है। जुबेर बिन नूफ़ैर से रिवायत है कि एक जमाअत ने उमर बिन ख़त्ताब से कहा हे अमीरुल मोमेनीन अल्लाह की क़सम हम ने किसी व्यक्ति को आपसे अधिक इन्साफ़ करने वाला, अधिक हक़ बोलने वाला और मुनाफ़क़ीन पर सख़्ती करने वाला नहीं देखा। निसदेह आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद लोगों में सबसे बेहतर हैं। औफ़ बिन मालिक ने इस कहने वाले व्यक्ति को कहा कि अल्लाह की क़सम! तुमने झूठ बोला है। निसंदेह हमने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उनसे बेहतर को देखा है अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से बेहतर को भी देखा। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा हे औफ़ वह कौन है तो उन्होंने कहा अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया औफ़ ने सच्च बोला और उस व्यक्ति को कहा कि तुमने झूठ बोला। अल्लाह की क़सम अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मुश्क की ख़ुशबू से भी अधिक पाकीज़ा हैं और मैं अपने घर वालों के ऊंटों से भी अधिक भटका हुआ हूँ। (कंज़ुल उम्माल मुजल्लद सादिस किताब फ़ज़ायल अल्सहाबा रिवायत नंबर 35624 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "हदीसों में आता है कि एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की किसी बात पर तकरार हो गई। यह तकरार बढ़ गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तबीयत तेज़ थी। इस लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुनासिब समझा कि वह इस जगह से चले जाएं ताकि झगड़ा बिला वजह अधिक न हो जाये। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जाने की कोशिश की तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का कुर्ता पकड़ लिया कि मेरी बात का जवाब देकर जाओ। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उसको छुड़ा कर जाने लगे तो आपका कुर्ता फट गया। आप वहां से अपने घर को चले आए लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को संदेह हुआ कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मेरी शिकायत करने गए हैं। वे भी पीछे पीछे चल पड़े ताकि मैं भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अपना उज्र पेश कर सकूं लेकिन रास्ते में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की नज़रों से ओझल हो गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यही समझे कि आप रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में शिकायत करने गए हैं वे भी सीधे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जा पहुंचे। वहां जा कर देखा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मौजूद नहीं थे लेकिन चूँकि उनके दिल में नदामत पैदा हो चुकी थी इस लिए अर्ज़ किया या अल्लाह! मुझ से ग़लती हुई कि मैं अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से सख़्ती से पेश आया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का कोई क़सूर नहीं। मेरा ही क़सूर है। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को जा कर किसी ने बताया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आपकी शिकायत करने गए हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि मुझे भी अपनी दोषमुक्ति के लिए जाना चाहिए ताकि एक तरफ़ा बात न हो जाए और मैं भी अपना नुक़्ता निगाह पेश कर सकूं। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मज्लिस में पहुंचे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अर्ज़ कर रहे थे कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझसे ग़लती हुई कि मैंने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से तकरार की और उनका कुर्ता मुझ से फट गया। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह बात सुनी तो ग़ुस्से के आसार आपके चेहरा पर ज़ाहिर हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। हे लोगो! तुम्हें क्या हो गया है जब सारी दुनिया मेरा इन्कार करती थी और तुम लोग भी मेरे मुख़ालिफ़ थे उस वक़्त अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही था जो मुझ पर ईमान लाया और हर रंग में उसने मेरी मदद की। फिर उदासीनता के साथ फ़रमाया क्या अब भी तुम मुझे और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को नहीं छोड़ते? आप यह फ़र्मा रहे थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो दाख़िल हुए। यह होता है सच्चे इशक़ का उदाहरण कि बजाय यह उज्र करने के कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरा क़सूर नहीं था उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क़सूर था। "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्होर जब दाख़िल हुए और''आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब देखा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में उदासीनता पैदा हो रही है आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सचे के आशिक़ की हैसियत से बर्दाश्त नहीं कर सके कि मेरी वजह से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ हो।" इस लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो''आते ही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने घुटनों के बल बैठ गए और अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उमर का क़सूर नहीं था मेरा क़सूर था।"

(खुत्बाते महमूद, भाग 27 पृष्ठ 313-314)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि उन्होंने लोगों से औरत के भ्रूण गिराने की सूरत में उसकी दियत के बारे में मश्वरा किया। मुग़ीरा ने कहा कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ग़ुलाम या लौंडी की क़ीमत बतौर दियत अदा करने का फ़ैसला फ़रमाया था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ऐसा व्यक्ति लाओ जो तुम्हारे साथ इस बात की गवाही दे। फिर मुहम्मद बिन मसलम ने गवाही दी कि वे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा ही फ़ैसला किया था। (सही अल्बुख़ारी किताब दियत बिन जनीन अल् मीरात 6905-6906) अर्थात किसी ज़ुलम की वजह से या ज़बरदस्ती किसी औरत का इस्कात (पेट से बच्चा गिरना या गिराना) हो जाए या करवाया जाए तो फिर उसकी दियत देनी ज़रूरी है और जिसने यह ज़ुलम किया हो वह दियत देगा और एक लौंडी या ग़ुलाम आज़ाद करेगा।

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से उनके पास हाज़िर होने की इजाज़त तलब की तो उन्होंने कहा अस्सलामो अलैकुम। क्या मैं अंदर आ सकता हूँ? उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दिल में कहा अभी तो एक-बार इजाज़त तलब की है। थोड़ी देर ख़ामोश रह कर फिर उन्होंने कहा अस्सलामो अलैकुम। क्या मैं अंदर आ सकता हूँ? उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दिल में कहा अर्थात जवाब दिल में दिया और फिर कहा कि अभी दो ही बार इजाज़त तलब की है। थोड़ी देर मज़ीद ख़ामोश रह कर उन्होंने फिर कहा अस्सलामो अलैकुम। क्या मुझे अंदर दाख़िल होने की इजाज़त है? जब अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो तीन बार इजाज़त तलब कर चुके तो फिर वापस हो लिए। जब तीन बार उन्होंने इजाज़त ले ली और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का जवाब नहीं सुना तो वापस चले गए। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दरबान

से कहा अबू मूसा ने क्या किया? उसने कहा कि लौट गए हैं। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि उन्हें बुला कर मेरे पास लाओ। फिर जब वह उनके पास आए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यह आपने क्या-किया है? उन्होंने कहा कि मैंने सुन्नत पर अमल किया है। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा सुन्नत पर? कसम अल्लाह की तुम्हें उसकी सुन्नत होने पर दलील और सबूत पेश करना होगा अन्यथा मैं तुम्हारे साथ सख़्त बरताव करूँगा। अबू सईद ख़ुदरी कहते हैं कि फिर वह हमारे पास आए। इस वक़्त हम अंसार की एक जमाअत के साथ थे। अबू मूसा अशरी ने कहा हे अंसार की जमाअत! क्या तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस को दूसरे लोगों से अधिक जानने वाले नहीं हो, क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह नहीं फ़रमाया اَلْاِسْتِئْذَانُ ثَلَاثٌ؛ अर्थात आज्ञा मांगना तीन बार है। यदि तुम्हें इजाज़त दे दी जाए तो घर में जाओ और यदि इजाज़त न दी जाए तो लौट जाओ। यह सुनकर लोग उनसे हंसी मज़ाक़ करने लगे। अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैंने अपना सिर अबू मूसा अशरी की तरफ़ ऊंचा कर के कहा इस सिलसिला में जो भी सज़ा आपको मिलेगी मैं इस में हिस्सादार हूँ। उन्होंने कहा ठीक है मैं गवाही देता हूँ कि आपने ठीक कहा है। रावी कहते हैं फिर वह अर्थात अबू सईद, उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और उनको इस हदीस की ख़बर दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि ठीक है मुझे इस हदीस का इलम नहीं था और अब मुझे इलम हो गया है।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी किताब अल्इस्तेज़ान बाब मा जाअ फिल इस्तेज़ान सलासत ,हदीसा 2690)

सही मुस्लिम में रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट बैठे हुए थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु समेत और लोग भी थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे मध्य से उठकर चले गए परन्तु आपको वापसी में देर हो गई और हम डरे कि आप हमसे कट न जाएं और हम घबरा गए और उठ खड़े हुए। सबसे पहले मुझे फ़िक्र पैदा हुई तो मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ढूढ़ने के लिए बाहर निकल पड़ा यहां तक कि मैं अंसार के एक बाग़ के पास आया जो बनू नज्जार का था। मैंने उसके गर्द चक्कर लगाया कि दरवाज़ा ढूंडूं परन्तु मैंने दरवाज़ा नहीं पाया फिर देखा कि पानी का एक बड़ा नाला बाहर एक कुँवें से बाग़ के अंदर जाता है तो कहते हैं मैं इस में लोमड़ी के सिमटने की तरह सिमट कर नाले के माध्यम से दाख़िल हुआ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास चला गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो? मैंने कहा जी हाँ हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! फ़रमाया क्या बात है? मैंने कहा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे मध्य तशरीफ़ फ़र्मा थे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उठ खड़े हुए परन्तु वापसी में आपको देर हो गई तो हम डर गए कि आप हमसे कट न जाएं तो हम घबरा गए। सबसे पहले मुझे फ़िक्र पैदा हुई और मैं इस बाग़ के पास आया और लोमड़ी की तरह सिमट कर इस में दाख़िल हुआ और वे लोग मेरे पीछे हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने जूते दिए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हे हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो! मेरे ये दोनों जूते ले जाओ और जो कोई इस बाग़ के परे तुम्हें मिले और यह गवाही देता हो कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं और दिल से इस बात पर विश्वास रखता हो तो इस बात पर उसे जन्नत की बशारत दे दो।

कहते हैं मैं जब गया तो सबसे पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मिले। उन्होंने कहा हे हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ये जूते कैसे हैं? मैंने कहा ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जूते हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये निशानी के तौर पर मुझे दिए हैं और इन दोनों के साथ भेजा है कि मैं जिससे मिलों और वे गवाही देता हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और दिल से इस पर विश्वास रखता हो तो मैं उसे जन्नत की बशारत दूं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ुस्सा में ज़ोर से मेरे सीने पर हाथ मारा और मैं पीठ के बल गिरा। उन्होंने कहा हे हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वापस जाओ। ख़ैर कोई ज़रूरत नहीं किसी को कुछ कहने की। कहते हैं मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास वापस गया और रोने ही लगा था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी मेरे पीछे पीछे आ पहुंचे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो! तुम्हें क्या हुआ मैं ने कहा मैं उमर से मिला था और उनसे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे देकर भेजा था वर्णन किया तो उमर ने मुझे सीने पर-ज़ोर से हाथ मारा। मैं पीठ के बल गिर गया। उन्होंने कहा वापस जाओ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उमर! तुमने ऐसा क्यों किया? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे रसूलुल्लाह! मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर फ़िदा हों। क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी जूतियों के साथ हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो को भेजा था कि जो उसे मिले और गवाही देता हो कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं और उसका दिल इस बात पर विश्वास रखता हो तो उसे जन्नत की बशारत दे दे? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हाँ। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि ऐसा न कीजीए क्योंकि मुझे डर है कि लोग फिर उसी पर भरोसा करने लग जाऐंगे। इसलिए बेहतर यही है कि आप उनको अमल करने दें वे अमल करें और नेकियों का जो हुक्म है, आदेशात हैं उन पर अमल करने दें ताकि वे हक़ीक़ी मोमिन बनें। नहीं तो ये केवल् इसी बात पर क़ायम हो जाऐंगे कि ला इलाहा इल-लल्लाह कहना ही जन्नत की बशारत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : अच्छा रहने दो । (सही मुस्लिम किताब अल् ईमान बाब अद्दलील अला अन्ना मात अलत्तौहीद दख़ल जन्नत कत्अन हदीस 147) ठीक है, इसी तरह करते हैं। बड़ी मुहतात तबीयत थी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से डर कर शैतान भी भागता है इस बारे में भी कुछ रिवायत हैं। सही बुख़ारी में एक रिवायत है। हज़रत साद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अंदर आने की इजाज़त मांगी और उस वक़्त आपके पास क़ुरैश की कुछ औरतें बैठी हुई थीं। वे आपसे बातें कर रही थीं और आपसे अधिक ख़र्च मांग रही थीं। उनकी आवाज़ आपकी आवाज़ से ऊंची थी। जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने अंदर आने की इजाज़त मांगी तो वे उठकर जल्दी से पर्दे में चली गईं और इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को आने की इजाज़त दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हंस रहे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे रसूलुल्लाह! अल्लाह आपको हमेशा हँसता रखे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन औरतों से मुतअज्जिब हूँ जो मेरे पास थीं। जब उन्होंने आपकी आवाज़ सुनी जल्दी से पर्दे में चली गईं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे रसूलुल्लाह! हालाँकि आप अधिक लायक़ हैं कि आपसे डरें। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने औरतों को सम्बोधित किया ऊंची आवाज़ में और कहने लगे : हे अपनी जानों की दुश्मनो क्या तुम मुझसे डरती हो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से नहीं डरतीं। वे बोलीं हाँ आप तो बड़े सख़्त मिज़ाज और सख़्त दिल हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसे नहीं हैं। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़त्ताब के बेटे सुनो। उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है। शैतान जब कभी भी तुम्हारे रास्ते पर चलते हुए मिला है तो ज़रूर ही उसने अपना वह रास्ता छोड़कर दूसरा रास्ता लिया है। (सही अल् बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी बाब फ़ज़ायल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हदीस 3683)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़र्मा थे कि हमने शोर सुना और बच्चों की आवाज़ें भी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हो गए। वहां हब्शा की एक औरत थी जो नाच कर करतब दिखा रही थी और बच्चे उसके इर्द-गिर्द जमा थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आयशा आ जाओ और देख लो। मैं आई और अपनी ठोढ़ी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कंधे पर रख कर देखने लगी। मेरी ठोढ़ी आपके सिर और कंधे के मध्य थी। फिर आप मुझसे फ़रमाने लगे क्या तुम बस नहीं हुई? मैंने कहा अभी नहीं ताकि मैं देखूं कि आपको मेरी कितनी क़दर है। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो लोग इस औरत के पास से भाग गए। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं देखता हूँ कि जिन और इन्स के शैतान उमर से भागते हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं फिर में वहां से लौट आई।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी किताब अल्मनाक़िब बाब क़ौलहू अन्न शैतान लयख़ाफ मिन्क़ या उमर हदीस 3691)

हज़रत बरीदा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम किसी ग़ज़वा के लिए निकले। जब आप वापस तशरीफ़ लाए तो एक काले रंग वाली लौंडी ने आकर अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो वसल्लम! मैंने मन्नत मानी थी कि अगर अल्लाह तआला आपको सलामती से वापस ले आया तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने बड़ी डफ्ली बजा कर गाना गांऊगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुमने नज़र मानी है तो बजा लो अन्यथा नहीं। इसलिए वह दफ़ बजाने लगी और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तशरीफ़ लाए। वह दफ़ बजाती रही। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो वह दफ़ बजाती रही। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो अन्हु आए तो फिर भी दफ़ बजाती रही। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए तो उसने दफ़ अपने नीचे रख लिया और उसके ऊपर बैठ गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उमर! शैतान भी तुझसे डरता है। मैं बैठा था तो यह दफ़ बजाती रही। फिर अबू बकर आए यह दफ़ बजाती रही। फिर अली आए तो भी बजाती रही। फिर उसमान आए तो यह बजाती रही परन्तु उमर! जब तुम आए हो तो उसने दफ़ रख दिया है।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी किताबअल्मनाक़िब बाब क़ौलहू अन्न शैतान लयख़ाफ मिन्क़ या उमर हदीस 3690)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा था कि यदि शैतान तुझ को किसी राह में पावे तो दूसरी राह इख़तियार करे और तुझसे डरे और इस दलील से साबित होता है कि शैतान हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से एक नामर्द ज़लील की तरह भागता है।"

(नूरुल हक़ हिस्सा अव्वल, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 8 पृष्ठ 143)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान और दिल पर हक़ और संतुष्टि के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मर्तबा फ़रमाया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने हक़ को उमर की ज़बान और दिल पर जारी कर दिया। (सुन्न तिरमिज़ी سنن ترمذی کتاب المناقب باب ان اللہ جعل الحق علی لسان عمر و قلبہ हदीस 3682)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो अपने भाई फ़ज़ल से रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि उमर बिन ख़त्ताब मेरे साथ होता है जहां मैं पसंद करता हूँ और मैं उसके साथ होता हूँ जहां वे पसंद करता है और मेरे बाद उमर बिन ख़त्ताब जहां होगा हक़ उसके साथ रहेगा।

(सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ इब्न जूज़ी पृष्ठ 21 मतबा मिस्रिया अल् अज़हर)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हम आपस में गुफ़्तगु किया करते थे कि धीरज हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान और दिल पर जारी होता है। (कंज़ुल उम्माल मुजल्लद सादिस भाग 12 किताब अलफ़ज़ायल, फ़ज़ायल उमर, रिवायत 35870 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2004 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी एक बीवी से कहा कि मेरा सामान-ए-सफ़र बांधना शुरू करो। उन्होंने सफ़र का सामन बांधना शुरू किया और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा मेरे लिए सत्तू इत्यादि या दाने इत्यादि भून कर तैयार करो। इसी किस्म के आहार उन दिनों में होते थे। इसलिए उन्होंने मिट्टी इत्यादि फटक के दानों से निकालनी शुरू की। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो घर में बेटी के पास आए और उन्होंने यह तैयारी देखी तो पूछा आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा यह क्या हो रहा है? क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी सफ़र की तैयारी है? कहने लगीं सफ़र की तैयारी ही मालूम होती है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सफ़र की तैयारी के लिए कहा है। कहने लगे कोई लड़ाई का इरादा है? उन्होंने कहा कुछ पता नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मेरा सामान-ए-सफ़र तैयार करो और हम ऐसा कर रहे हैं। दो तीन दिन के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और कहा देखो! तुम्हें पता है ख़ुज़ाआ के आदमी इस तरह आए थे और फिर बताया कि यह वाक़िया हुआ है और मुझे ख़ुदा ने इस वाक़िया की पहले से ख़बर दे दी थी कि उन्होंने ग़द्दारी की है।" अर्थात मक्का वालों ने ग़द्दारी की है'' और हमने उनसे मुआहिदा किया हुआ है। अब यह ईमान के ख़िलाफ़ है कि हम डर जाएं और मक्का वालों की बहादुरी और ताक़त देख कर उनके मुक़ाबला के लिए तैयार न हों जाएं तो हमने वहां जाना है। तुम्हारी क्या राय है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा या रसूलुल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तो उनसे मुआहिदा किया हुआ है और फिर वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अपनी क़ौम है। मतलब यह था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपनी क़ौम को मारेंगे? "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने'' फ़रमाया हम अपनी क़ौम को नहीं मारेंगे। वादा तोड़ने वालों को मारेंगे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा तो उन्होंने कहा बिसमिल्लाह मैं तो रोज़ दुआएं करता था कि यह दिन नसीब हो और हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त में कुफ़्फ़ार से लड़ें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बड़ा नरम तबीयत का है परन्तु सच्चा कथन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान से अधिक जारी होता है। फ़रमाया करो तैयारी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इर्द गिर्द के क़बायल को ऐलान भिजवाया कि हर व्यक्ति जो अल्लाह और रसूल पर ईमान रखता है वह रमज़ान के इबतिदाई दिनों में मदीना में जमा हो जाए। इसलिए लश्कर जमा होने शुरू हुए और कई हज़ार आदमियों का लश्कर तैयार हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लड़ने के लिए तशरीफ़ ले गए।"

(सैर-ए-रुहानी 7) अनवारुल उलूम जल्द 24 पृष्ठ 260-261)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ज़ीलत के बारे में एक रिवायत है हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इल्लियीन वालों में से कोई व्यक्ति जन्नत वालों पर झाँकेगा तो उसके चेहरे की वजह से जन्नत जगमगा उठेगी। मानो एक चमकता हुआ सितारा है और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनमें से हैं और वे दोनों क्या ही ख़ूब हैं।

(सुन्न अबू दाऊद किताब अल्हरूफ वल्क़िराअत ,हदीस 3987)

अबू उसमान से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ातुस सलासिल की फ़ौज पर अफ़्सर निर्धारित कर के भेजा। उस ज़माने का जो सफ़र का तरीक़ा होता था उसके अनुसार यह मदीना से कोई एक दिन के सफ़र पर वाक़्य जगह है। और वादी अल् क़रा से आगे क़बीला जुज़ाम के इलाक़े में एक कुँवें का नाम है। हज़रत अम्र कहते हैं कि जब मैं आपके पास वापस आया तो मैंने आपसे पूछा लोगों में से आपको कौन अधिक प्यारा है? आपने फ़रमाया आयशा। मैंने कहा मर्दों में से कौन अधिक प्यारा है, आपने फ़रमाया उस आयशा का बाप। मैंने कहा फिर कौन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उमर। फिर आपने कई मर्दों का नाम लिया। (सही अल् बुख़ारी, किताब अल् मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वा सलासिल .... हदीस 4358) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 152 ज़वार एकेडेमी कराची 2003 ई.)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजिरीन और अंसार में से अपने सहाबा के पास निकल कर आते और वे बैठे होते। उनमें अबू बकर और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी होते तो उनमें से कोई अपनी निगाह आपकी तरफ़ नहीं उठाता था अतिरिक्त अबू बकर और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के। ये दोनों आपको देखते और मुस्कुराते और आप इन दोनों को देखते और मुस्कुराते।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी, क़िताबुल मनाक़िब बाब फी मा ले इबी बकर व उमर इन्दन्नबिय्या सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदीस 3668)

हज़रत इब्ने उमर से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन निकले और आप और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में दाख़िल हुए उनमें से एक आपके दाएं जानिब थे और दूसरे बाएं जानिब और आप उन दोनों का हाथ पकड़े हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : इसी तरह हम क़यामत के दिन उठाए जाऐंगे।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी, क़िताबुल मनाक़िब बाब क़ौलहू लेइबी बकर व उमर हाकज़ा नबअसो यौमल क़ियामत , हदीस 3669)

अब्दुल्लाह बिन हनतब से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखकर फ़रमाया ये दोनों कान और आँख हैं। (सुन्न अल् तिरमिज़ी, المناقب، باب قوله فيهما هذان السمع والبصر، हदीस 3671)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा : हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सबसे बेहतर इन्सान इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा सुनो अगर तुम ऐसा कह रहे हो तो मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है किसी आदमी पर सूरज तलूअ नहीं हुआ जो उमर से बेहतर हो।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी, किताब अल् मनाकिब, باب قول عمر لابی بکر یا خیر الناس بعد رسول اللہﷺ हदीस 3684)

हज़रत इब्ने उमर से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं वह पहला व्यक्ति हूँगा जिससे ज़मीन फट जाएगी। फिर अबू बकर। फिर उमर रज़ियल्लाहु अन्हो। फिर मैं बक़ीअ वालों के पास आऊँगा तो वे मेरे साथ उठाए जाऐंगे। फिर मैं मक्का वालों का इंतिज़ार करूँगा यहां तक कि हरमैन के मध्य उठाया जाऊँगा।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी किताब المناقب باب انا اول من تنشق عنه الارض ثم ابوبکر ثم عمر हदीस 3692)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे पास जन्नत वालों में से एक व्यक्ति आ रहा है तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आए। फिर फ़रमाया: तुम्हारे पास जन्नत वालों में से एक व्यक्ति आ रहा है तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आए।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी, किताब المناقب ،باب اخباره عن اطلاع رجل من اهل الجنة فاطلع عمر हदीस 3694)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में फ़रमाया। ये दोनों जन्नत के अव्वलीन और आख़रीन के समस्त बड़ी उमर के लोगों के सरदार हैं अतिरिक्त नबियों और रसूलों के।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी, अल्मनाक़िब बाब अक़तदू बिल्लज़ीन मिन बअदी,हदीस 3664)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे बाद उन दोनों अबू बकर और उमर की पैरवी करना।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी, किताबुल मनाक़िब बाब इक़तदू बिल्लज़ीन मिन्म बअदी हदीस 3662)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर नबी के आसमान वालों में से दो वज़ीर होते हैं और ज़मीन वालों में से भी दो वज़ीर होते हैं। आसमान वालों में से मेरे दो वज़ीर जिबराईल और मीकाईल हैं और ज़मीन वालों में से मेरे दो वज़ीर अबू बकर और उमर हैं।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी, किताबुल मनाक़िब बाब फअम्मा वज़ीराई फिल अरज़ ...हदीस 3680)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ी से मर्वी है कि हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं नहीं जानता कि मैं कब तक तुम्हारे मध्य रहूँगा। अत: तुम लोग इन दोनों की पैरवी करो जो मेरे बाद होंगे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ इशारा किया।

(सुन्न अल् तिरमिज़ी, क़िताबुल मनाक़िब बाब फी मनाक़िब अबी बकर व उमर कुलोहुमा हदीस 3663)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक रोज़ फ़रमाया तुम में से किस ने स्वप्न देखा है। एक व्यक्ति ने अर्ज़ किया कि मैंने देखा मानो कि एक तराज़ू है। आसमान से उतरा है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को तौला गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से भारी हुए। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को तौला गया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भारी हुए। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो अन्हु को तौला गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भारी हुए। इस के बाद मीज़ान तराज़ू उठा लिया गया। रावी कहते हैं कि हमने आपके चेहरे पर नापसंदीदगी के आसार देखे।

एक और रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ाब के सुनने के बाद फ़रमाया : यह नबुव्वत की ख़िलाफ़त है। इस के बाद अल्लाह जिसे चाहेगा बादशाहत प्रदान फ़रमाएगा।

(सुन्न अबू दाऊद, किताब अस्सुन्नत बाब फिल ख़लफा,हदीस 4634-4635)

(किताबुस्सुन्नत भाग 12 पृष्ठ 387-388 औनुल मअबूद शरह सुनन अबी दाऊद , बाब फिल ख़ुलफाअ प्रकाशन अल्मक़तबत स्लीफिया मदीना,1969ई)

अबदे ख़ैर वर्णन करते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर खड़े हुए और कहने लगे कि हे लोगो! क्या मैं तुम्हें नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद इस उम्मत के सबसे बेहतरीन इन्सान के बारे में न बताऊं। लोगों ने कहा क्यों नहीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। फिर आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे और फिर कहने लगे हे लोगो! क्या मैं तुम्हें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद इस उम्मत के सबसे बेहतरीन इन्सान के बारे में बताऊं वे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(हुलयितुल औलिया लेखक इमाम असफहानी भाग 7 पृष्ठ 205 हदीस 10323 मकतबा ईमान मंसूरा 2007ई.)

अबू जुहैफ़ा कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से सुना कि इस उम्मत में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सबसे बेहतरीन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। फिर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (हुलयितुल औलिया लेखक इमाम असफहानी भाग 7 पृष्ठ 205 हदीस 10325 मकतबा ईमान मंसूरा 2007 ई.)

यह वर्णन अभी चल रहा है। आगे भी इन शा अल्लाह यह वर्णन होगा। कुछ देर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह वर्णन चलेगा।

इस वक़्त में नमाज़ के बाद कुछ जनाज़े पढ़ाऊंगा जिनका वर्णन यहां कर देता हूँ। पहला वर्णन श्रीमान् कामरान अहमद साहिब शहीद इब्न नसीर अहमद साहिब आफ़ पिशावर है। 9 नवंबर को मुख़ालिफ़ीन ने उनके ऑफ़िस में फायरिंग करके उन्हें शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। शहीद की उमर चवालीस (44) वर्ष थी। पिशावर में एक अहमदी श्रीमान् शफ़ीक़ रहमान साहिब की फ़ैक्ट्री में बतौर एकाऊंटैंट काम कर रहे थे। एक हथ्यारों के साथ व्यक्ति दफ़्तर में आया और आके फायरिंग कर दी। उन्हें चार गोलियां लगीं और वहीं पर शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। घटना के बाद क़ातिल भाग गया। शहीद मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत का आरंभ उनके पिता श्रीमान् नसीर अहमद साहिब के नाना हज़रत नबी-बख़्श साहिब इब्न फ़तह दीन साहिब आफ़ भेनी बांगड़ निकट क़ादियान के माध्यम से हुआ था जिन्होंनें 1902 ई. में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत करके अहमदियत में शमूलीयत इख़तियार की थी। शहीद मरहूम ने कुछ अरसा पूर्व एक दुकान लेकर अपने भाई के साथ एक ऑफ़िस बनाया था। मालिक दुकान ने महिज़ अहमदी होने की बिना पर एक दिन के नोटिस पर दुकान ख़ाली करवा ली और इसके बाद चौंक का नाम ख़त्म नबुव्वत चौंक रख दिया गया। क़रीबी एक दुकान लेने पर मुख़ालिफ़ीन ने जलूस निकाल कर वह दुकान भी ख़ाली करवा ली। उनके घर के क़रीब अक्तूबर में बड़ा जलसा किया गया और जमाअत के ख़िलाफ़ शदीद इश्तिआल अंगेज़ तक़ारीर की गईं। यह कहते हैं कि इस इलाक़े में इतना बड़ा जलसा हमने पहले कभी नहीं देखा। इस इलाक़े में शदीद नफ़रत की फ़िज़ा क़ायम हो गई। शहीद मरहूम अरसा कई वर्ष से एक प्राईवेट इदारे के एकाऊंटस के मुआमलात को भी देखते थे। मुख़ालिफ़त की वजह से उन्होंने वहां से माज़रत कर दी तो उन लोगों ने कहा कि आपका किरदार और दियानत ऐसी है कि हम आपको नहीं छोड़ सकते चाहे चंद मिनट के लिए हमारे पास आ जाया करें और जब उनकी शहादत की ख़बर पहुंची तो वे लोग बड़े तकलीफ़ में थे। शहीद मरहूम बेशुमार ख़ूबियों के मालिक थे। उनके पिता कहते हैं कि रात को देर से घर आने पर एक दिन मैंने उनसे पूछा कि बड़ी देर से घर आए हो। क्या वजह है? तो कहने लगे अमुक जो मुख़ालिफ़-ए-अहमदियत है बल्कि दुश्मन है, इस मुख़ालिफ़ की फ़ैमिली में किसी औरत को ख़ून की ज़रूरत थी उसको ख़ून दे के आया हूँ और ख़ून इसलिए दिया है कि ये लोग माली लिहाज़ से कमज़ोर हैं और मजबूर हैं और उनका अपना किरदार है और हमारा अपना किरदार है। हमेशा ख़िदमत में पेश पेश रहते। जमाअती ख़िदमत और डयूटियों में सबसे पहले हाज़िर होते और हमेशा संदिग्ध मुक़ाम पर ख़ुद खड़े होते। फिर हिज्रत करने के लिए जब उनको मश्वरा दिया जाता

तो कहते अगर हम लोग यहां से चले गए तो कमज़ोर अहमदियों के मसायल और बढ़ जाऐंगे। चंदाजात की अदायगी में उनकी बड़ी नुमायां हैसियत थी। चंदाजात की तहरीक के वक़्त हमेशा अव्वलीन वक़्त में अदायगी किया करते थे। बारह तेराह वर्ष की उमर में एक दफ़ा मुबाहला पमफ़लेट तक़सीम करने की वजह से उनको पुलिस ने पकड़ कर हवालात में भी बंद कर लिया। अगले दिन उनकी रिहाई हुई। कहते हैं वाक़िया शहादत से दो दिन पहले उन्होंने ख़ाब देखी थी कि एक बुज़ुर्ग महिला उनके घर की सफ़ाई कर रही हैं और कह रही हैं कि ख़लीफ़ा राबे ने आना है तो कहते हैं कि थोड़ी देर के बाद हुज़ूर रहमाहुल्लाह तशरीफ़ लाए और शहीद मरहूम का हाथ पकड़ लिया और बड़े प्यार से कहा कि हम इकट्ठे रहेंगे और तुमने मेरे साथ ही रहना है। अल्लाह तआला के फज़ल से वसीयत के निज़ाम में शामिल थे। नरम मिज़ाज, इलाक़े की हरदिल अज़ीज़ शख़्सियत थे। शरीफ़ नफ़स, ग़रीबों के हमदर्द, ख़िलाफ़त से बेपनाह इशक़ रखने वाले। पीछे रहने वालों में उनके पिता नसीर अहमद साहिब और माता हैं और पत्नी हैं और तेरह वर्ष, ग्यारह वर्ष और आठ वर्ष के तीन बच्चे हैं। अल्लाह तआला इन बच्चों का भी हाफ़िज़-ओ-नासिर हो और सबको हौसला और सब्र प्रदान फ़रमाए और उनसे भी मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनके माता भी बीमार हैं। उनके लिए भी दुआ करें। कैंसर के मरीज़ हैं। अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।

दूसरा वर्णन डाक्टर मिर्ज़ा नुबीर अहमद और उनकी पत्नी आयशा अम्बर सय्यद का है। अमरीका मिलवाकी (milwakee) में एक हादिसे में इन दोनों की वफ़ात हो गई। डाक्टर मिर्ज़ा नबीर अहमद की उमर पैंतीस (35) वर्ष थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम के पड़दादा हज़रत डिप्टी मियां मुहम्मद शरीफ़ साहिब थे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। और मरहूम की दादी मास्टर अब्दुर्रहमान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो की बेटी थीं। उनके पड़नाना भी सहाबी थे। उनके ख़ानदान में काफ़ी सहाबा हैं। 2012 ई. में यह अमरीका स्थानांतरित हुए। सतरह वर्ष की उमर में उनको निज़ाम वसीयत में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। क़ायद मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे। कहते हैं कि मरहूम मलवाकी मस्जिद के लिए एक नई इमारत ख़रीदने के लिए मुक़ामी जमाअत के सबसे अधिक अतीया पेश करने वाले अहबाब में शामिल थे। पीछे रहने वालों में उनके पिता मिर्ज़ा नसीर अहमद साहिब हैं जो उस वक़्त सैक्रेटरी उमूर-ए-आम्मा इस्लामाबाद हैं। माता लजना इस्लामाबाद की रीजनल सदर हैं। बहन हैं नादिया और दो भाई हैं। और उनकी पत्नी आयशा अम्बर जो उनके साथ थीं जिनकी वफ़ात हुई वह सय्यद सज्जाद अहमद शाह साहिब जापान की बेटी थीं और जापान में आजकल हमारे मुरब्बी सिलसिला सय्यद इबराहीम की बहन थीं। उनके ख़ानदान में अहमदियत सय्यद अबदुर्रहीम शाह साहिब आफ़ फिगला के माध्यम से थी। 1930 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर उन्होंने बैअत की थी और जैसा कि मैंने बताया कि आयशा अम्बर की वफ़ात भी अपने पति के साथ ही ऐक्सिडन्ट में दो दिन के बाद हुई। मरहूमा एम.टी.ए इंटरनैशनल की एक सक्रिय टीम मैंबर थीं और मेरे ख़ुतबे जो थे उनका जापानी में लाईव अनुवाद भी किया करती थीं और जापानी ज़बान में subtitling भी किया करती थीं। उनके परिजनों में उनके पिता सय्यद सज्जाद अहमद हैं, माता सय्यदा दुर्रे समीन सय्यद हैं। तीन भाई और एक बहन हैं। उनके भाई इब्राहीम साहिब जो जापान में मुरब्बी सिलसिला हैं वह कहते हैं बहुत सारे जमाअती कामों में मेरी मदद करती थीं। "लैक्चर लाहौर" और "हमारा ख़ुदा" के जापानी अनुवाद में मेरी मदद करती रहीं और ऐसा अनुवाद करती थीं कि मैं हमेशा हैरान होता था कि बावजूद फार्मेसी पढ़ने के इतना अच्छा अनुवाद कैसे कर लेती हैं। उनकी बड़ी बहन फ़ातिमा हैं वह कहती हैं कि उनकी एक डायरी थी जो इत्तिफ़ाक़ से मेरे पास आ गई और हर पृष्ठ दो विषयों पर मुश्तमिल होता था। एक पर लिखा हुआ था मेरी दुनियावी ज़िंदगी और एक पर लिखा हुआ था मेरी रुहानी ज़िंदगी और दुनियावी पृष्ठ रोज़मर्रा की ज़िंदगी के कामों और दुनियावी उद्देश्य के लिए निर्धारित थे और रुहानी पृष्ठ रुहानी उद्देश्य के लिए और जमाअत के नोटिस और दीनी इलम के लिए वक़्फ़ था। हर पृष्ठ बहुत ख़ूबसूरती और सोच समझ कर लिखा होता था। ख़लीफ़ा वक़्त के हर हर शब्द को ग़ौर से सुनना और उस पर अमल करना और अपने बहन भाईयों को भी इस की तलक़ीन करना उनका ख़ास तरीक़ा था। जापानी सहेलियों को भी इस्लाम की पुर हिक्मत शिक्षा से आगाह किया करती थीं। अल्लाह तआला दोनों मरहूमीन से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

पृष्ठ 1 का शेष

तोड़ने पर तत्पर नहीं कर सकती। जितने कष्ट और बलाऐं बढ़ती जाएं, वह उसके सिदक़के स्थान को ज़्यादा मज़बूत और आन्नददायक बनाती हैं।

सार यह कि जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूँ कि जब इन्सान إِيَّاكَ نَعْبُدُ कह कर सिदक़ और वफ़ादारी के साथ क़दम उठाता है तो ख़ुदा तआला एक बड़ी नहर सिदक़ की खोल देता है जो उसके दिल पर आकर गिरती है और उसे सिदक़ से भर देती है। वह अपनी तरफ़ से साधारण वस्तु लाता है परन्तु अल्लाह तआला उच्च स्तर की क़ीमती चीज़ उसको प्रदान करता है इससे हमारा मक़सद यह है कि इस स्थान में इन्सान यहां तक क़दम मारे कि वह सिदक़ उसके लिए एक चमत्कार वाला निशान हो। इस पर इतने मआरिफ़ और हक़ायक़ का दरिया खुलता है और ऐसी शक्ति दी जाती है कि हर व्यक्ति की ताक़त नहीं है कि इस का मुक़ाबला करे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 332 से 334 प्रकाशन 2008 ई क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

अगला वर्णन चौधरी नसीर अहमद साहिब का है जो कराची में इस वक़्त क्लिफ्टन जमाअत के सैक्रेटरी माल थे। चौधरी नज़ीर अहमद साहिब रब्वाह के ये बेटे थे। उनहत्तर वर्ष की उमर में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। वफ़ात के वक़्त यह अपनी पत्नी और अपने सांडू साहब को नमाज़-ए-फ़ज्र की इमामत करवा रहे थे तो दूसरी रकात में सज्दे के दौरान अचानक हरकत क़लब बंद हो जाने की वजह से अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हो गए। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ की हालत में मौत को एक काबिल रशक मौत क़रार दिया है।(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 542)

चौधरी नज़ीर अहमद साहिब जो उनके पिता थे उनको भी रिटायरमैंट के बाद पच्चीस वर्ष जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। नायब नाज़िर कृषि और वकील कृषि रहे। उनके छोटे भाई हैं चौधरी नईम अहमद साहिब वह अंजुमन के उस वक़्त अफ़्सर ख़ज़ाना हैं। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी हैं नुसरत नसीर साहिबा। उनकी औलाद नहीं थी। 1972 ई. में कराची शिफ़्ट हुए। वहीं उनका कारोबार था। वहां मुख़्तलिफ़ हैसियतों से जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और ग़ैरमामूली ख़िदमत की उन्होंने तौफ़ीक़ पाई। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन सरदारां बी-बी साहिबा पत्नी चौधरी नबी-बख़्श साहिब दारुल रहमत ग़र्बी रब्वाह का है जिनकी पिछले दिनों वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनका ताल्लुक़ पठानकोट ज़िला गुरदासपुर से था। फिर यह हिज्रत करके पाकिस्तान आ गए। पहले स्यालकोट फिर सिंध। माता पिता और सारा ख़ानदान शीया मसलक से ताल्लुक़ रखता है। 1949 ई. में जब अपने ख़ानदान के साथ आपने अहमदियत क़बूल की तो माता पिता ने कहा कि तुम्हारा पति काफ़िर हो गया है इस लिए तुम वापस आ जाओ। ख़ानदान के साथ नहीं अपने पति के साथ अहमदियत क़बूल की थी। बाक़ी ख़ानदान ने बैअत नहीं की। उन्होंने कहा पति काफ़िर हो गया है इसलिए तुम उसको छोड़ दो। इस पर उन्होंने अपने घर वालों को, ख़ानदान को जवाब दिया कि अब तो मैं सही मुस्लमान हुई हूँ। आपके पास तो केवल फ़ज्र की नमाज़ पढ़ती थी और अब मैं न केवल पाँच वक़्त की नमाज़ें बल्कि तहज्जुद की नमाज़ भी बाक़ायदगी से पढ़ती हूँ इस लिए वापस नहीं आऊँगी। चौदह वर्ष के बाद अपने माता पिता को मिलने गईं तो उस वक़्त भी वे बड़ी सर्दमहरी से मिले और इसके बावजूद उनके दिल नर्म नहीं हुए और कभी वे उनको मिलने नहीं आए। जमाअत से सच्चा प्यार करती थीं ख़िलाफ़त से फ़दाईत का ताल्लुक़ था। ग़रीबपर्वर, नेक और मुख़लिस महिला थीं। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में तीन बेटे और चार बेटियां शामिल हैं। उनके बड़े बेटे डाक्टर अबदुर्रहीम साहिब को नुसरत जहां के तहत पाँच वर्ष सैरालियुन में ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। छोटे बेटे अब्दुल ख़ालिक़ नय्यर साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं आजकल कैमरोन में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। वहां मिशनरी इंचार्ज भी हैं। अमीर भी हैं जो मैदान-ए-अमल में इस वक़्त मसरूफ़ हैं और इस वजह से माता के जनाज़ा में भी शामिल नहीं हो सके। अल्लाह तआला इन सबको सब्र और हौसला भी प्रदान फ़रमाए। मरहूमा के दर्जात फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 7 Thursday 6-13 January 2022 Issue No.1-2

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (अन्तिम भाग-24)

करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से इंटरव्यू

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

10 जून 2015 ई. बुधवार के दिन

जर्मनी से प्रस्थान और लंदन में वापसी

सुबह चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बिशारत ओसना बर्क में नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए

आज प्रोग्राम के अनुसार जर्मनी ओसना बर्क से लंदन (बर्तानिया) के लिए प्रस्थान था। स्थानीय जमाअत से जमाअत के लोग पुरुष और महिलाएं, बच्चे, बूढ़े अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही मस्जिद के बाहरी सेहन में जमा होने शुरू हो गए थे।

सुबह दस बजकर पैंतालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान से बाहर पधारे। छोटे बच्चे और बच्चियां समूहों की सूरत मेंअलविदाई नज़्में पढ़ रही थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दिए और इस के बाद सफ़र शुरू होने से पूर्व दुआ करवाई।

दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और क़ाफ़ला यात्रा पर रवाना हुआ। लोगों पुरुषों, महिलाओं ने निरन्तर अपने हाथ बुलंद किए अपने प्यारे और महबूब आक़ा को अलविदा कह रहे थे। बहुतों की आँखों से आँसू बह रहे थे और जुदाई के ये क्षण इन प्यारों के लिए कठिन बन थे।

ओसना बर्क से फ्रांस की बंदरगाह Calais तक का सफ़र 580 किलो मीटर है और रास्ता में हॉलैंड और बैलजियम से गुज़रना पड़ता है। लगभग 360 किलो मीटर की यात्रा करने के बाद लगभग मध्याह्न दो बजे पहले से निर्धारित प्रोग्राम के अनुसार बैलजियम में मोटरवे पर स्थित Arnst के स्थान पर एक रेस्टोरेंट में मध्याह्न के खाने के लिए क़ाफ़ला रुका जहां जमाअत जर्मनी से ख़ुद्दाम की एक टीम क़ाफ़ला के यहां पहुंचने से पूर्व ही खाने और नमाज़ों की अदायगी के इंतिज़ामात के लिए इस जगह पहुंची हुई थी और क़ाफ़ला की आमद से पूर्व समस्त इंतिज़ामात मुकम्मल हो चुके थे।

इसी रेस्टोरेंट के एक हिस्सा में नमाज़ों की अदायगी का प्रबन्ध किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़-ए-जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। इस के बाद खाने के प्रोग्राम के बाद तीन बजे यहां आगे प्रस्थान से पूर्व हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने विनय से जर्मनी से साथ आए हुए लोगों को हाथ मिलाने का सौभाग्य प्रदान किया।

अमीर जमाअत अहमदिया जर्मनी आदरणीय अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहब, मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी आदरणीय हैदर अली ज़फ़र साहब, जनरल सेक्रेटरी आदरणीय इलयास अहमद मजोका साहब, असिस्टेंट जनरल सेक्रेटरी आदरणीय यहया साहब, आदरणीय अब्दुल्लाह सपरा साहब और आदरणीय सदर साहब मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी और उनके साथ आई हुई ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल से हाथ मिला सकने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस अवसर पर इन सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ फ़ोटो बनवाने का भी सौभाग्य पाया।

तीन बजे यहां से फ्रांस की बंदरगाह Calais की ओर यात्रा शुरू हुआ और मज़ीद 125 किलो मीटर की यात्रा करने के बाद बेल्जियम का बॉर्डर उबूर करके मुल्क फ्रांस में दाख़िल हुए। यहां से Calais का दूरी 95 किलो मीटर है।

छः बजे चैनल टनल आमद हुई। जर्मनी से साथ आने वाले लोगों और ख़ुद्दाम की सिक्योरिटी टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल को चैनल टनल तक छोड़ने और विदा करने और अलविदा कहने के लिए क़ाफ़ला के साथ ही रही और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को यहां से लंदन के लिए विदा करके वापस (जर्मनी) के लिए रवाना हुई।

पासपोर्ट, इमीग्रेशन और अन्य दस्तावेज़ात की क्लीयरैंस के बाद क़ाफ़ले की गाड़ियां विशेष पार्किंग एरिया में आकर रुकीं। ट्रेन के प्रस्थान में अभी कुछ समय बाक़ी था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए गाड़ी से बाहर पधारे

छः बजकर चालीस मिनट पर क़ाफ़ले की गाड़ियां ट्रेन में बोर्ड हुईं। ट्रेन अपने समय पर छः बजकर 50 मिनट पर Calais से बर्तानिया के तटीय शहर Dover की ओर रवाना हुई। लगभग आधा घंटे के यात्रा के बाद ट्रेन चैनल टनल क्रास करके Dover के क़रीब बर्तानिया की सरज़मीन में दाख़िल हुई और अपने विशेष स्टेशन पर रुकी। लगभग दस मिनट के वक़फ़ा के बाद फ्रांस के समय के अनुसार साढ़े सात बजे और बर्तानिया के समय के अनुसार साढ़े छः बजे क़ाफ़ले की गाड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और मोटरवे पर यात्रा शुरू हुई।

आदरणीय अमीर साहब यू.के, आदरणीय मुबल्लिग़ इंचार्ज साहब यू.के मा सिक्योरिटी टीम और अन्य जमाअती अधिकारियों के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को स्वागत कहने के लिए उपस्थित थे

लगभग डेढ़ घंटे के बाद शाम आठ बजे मस्जिद फ़ज़ल लंदन में पधारे जहां जमाअत के लोग पुरुषों महिलाओं की एक बड़ी संख्या ने अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कहा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

इस तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की यह अत्यधिक बाबरकत यात्रा अल्लाह तआला के बे इंतिहा फ़ज़्लों और बरकतों को समेटते हुए बख़ैर ख़ूबी अपने अंत को पहुंची। अलहमदो लिल्लाह अला ज़ालिक

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 10 सितम्बर 2015)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad